



अंक:132

दक्षिण ध्वनि



दक्षिण रेलवे
मुख्यालय, राजभाषा संगठन,
चेन्नै – 600 003.

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप-समिति द्वारा निरीक्षण



चेन्नै सेंट्रल स्टेशन



रामेश्वरम रेलवे स्टेशन



मंडल रेल प्रबंधक/ कार्यालय/मदुरै



उदगमंडलम रेलवे स्टेशन



मंडल रेल प्रबंधक/कार्यालय/पालक्काड



मंडल रेल प्रबंधक/ कार्यालय/तिरुवनंतपुरम

दक्षिण ध्वनि

(सर्वत्र गुंजायमान हो यह ध्वनि)



संरक्षक

आर.एन.सिंह

महाप्रबंधक



परामर्शदाता

गौतम दत्त

प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं

मुख्य राजभाषा अधिकारी



संपादक

डॉ. दीनानाथ सिंह

उप महाप्रबंधक, राजभाषा

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं।

इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

(केवल सरकारी प्रयोग के लिए)

संपादक मंडल व संपर्क पता

राजभाषा संगठन, दक्षिण रेलवे मुख्यालय



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



महाप्रबंधक कार्यालय/Office of the General Manager
चेन्नै/Chennai - 600 003.

आर.एन.सिंह
महाप्रबंधक

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि दक्षिण रेलवे मुख्यालय द्वारा गृह पत्रिका “दक्षिण ध्वनि” के 132वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

सांस्कृतिक और भाषायी विविधता वाले इस देश की संपर्क भाषा और राजभाषा हिंदी है। जिस तरह भारतीय रेल अपने विशाल और विस्तृत नेटवर्क से देश के हर भाग को जोड़ती है, उसी तरह हिंदी भी देश की विभिन्न भाषाओं के बीच सेतु का काम करते हुए विभिन्न भाषा-भाषी लोगों को एक दूसरे के करीब लाती है और उनमें प्रेम और सौहार्द का संचार करती है। इस तरह हिंदी रेल की भाषा और राजभाषा के साथ – साथ प्रेम और मेल की भाषा की भूमिका भी निभाती है।

दक्षिण भारत के तमिलनाडु जैसे हिंदीतर भाषी क्षेत्र से इस गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन इस पत्रिका से यहाँ के रेल कर्मियों के लगाव को दर्शाता है। यह पत्रिका इस रेलवे के हिंदी भाषी और हिंदीतर भाषी रेलकर्मियों की सृजनशीलता और उनके भीतर छिपी प्रतिभा को उभारने और उन्हें निखारने का काम कर रही है।

मैं पत्रिका की उत्तरोत्तर सफलता की कामना करता हूँ।

(आर.एन.सिंह)



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway

प्रधान कार्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.



गौतम दत्त

प्रधान मुख्य यांत्रिक इंजीनियर एवं
मुख्य राजभाषा अधिकारी

संदेश

दक्षिण रेलवे की गृह पत्रिका “दक्षिण ध्वनि” के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मुझे हर्ष की अनुभूति हो रही है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। यह वह दर्पण होता है जिसमें हम अपने आस-पास और परिवेश को रचनाकार की रचनाओं के माध्यम देखते हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग अपनी सोच और अपने विचारों तथा मनोभावों को अपनी रचनाओं के माध्यम से इसमें रखता है और यही रचनाएं समाज को इसमें प्रतिबिंबित करती हैं। इस पत्रिका में दशकों से इस रेलवे के रेलकर्मियों की स्तरीय रचनाएं प्रकाशित होती रही हैं। विभिन्न विषयों पर प्रकाशित लेख, आलेख, कहानियां, कविताएं, यात्रा वृत्तांत आदि पत्रिका की गुणवत्ता में वृद्धि करने के साथ-साथ इसे रोचक और ज्ञानवर्धक बना देते हैं। इसके कारण पाठकों को इस पत्रिका के प्रत्येक अंक के प्रकाशन का बेसब्री से इंतजार रहता है।

मुझे पूरा विश्वास है कि पूर्ववर्ती अंकों की भांति प्रचुर पठनीय सामग्री से युक्त पत्रिका का यह अंक भी पाठकों की अपेक्षाओं को पूरा करेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए रचनाकारों एवं संपादक मंडल को मेरी बधाई !

74

(गौतम दत्त)



भारत सरकार/Government of India
रेल मंत्रालय/Ministry of Railways
दक्षिण रेलवे/Southern Railway



प्रधान कार्यालय/ Headquarters Office
चेन्नै/Chennai - 600 003.

डॉ.दीनानाथ सिंह
उप महाप्रबंधक, राजभाषा

संपादकीय

गुजरात के सूरत शहर में सितंबर 2022 में दूसरा अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन अच्छी तरह संपन्न हो गया। इस दो दिवसीय सम्मेलन में हिंदी के अनेक पक्षों पर चर्चा हुई। सम्मेलन के उद्घाटन में गृह मंत्री ने प्रधान मंत्री के उस आह्वान का उल्लेख किया जिसमें उन्होंने देशवासियों से यह संकल्प लेने को कहा है कि आनेवाले 25 सालों में देश भाषायी लघुताग्रंथि से मुक्त होकर स्वभाषा का विकास करेगा और देश को दुनिया में सर्वोच्च स्थान पर पहुंचाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि हमारी राजभाषा और स्थानीय भाषाएं विश्व की समृद्ध भाषाओं में शामिल हैं और जब तक हम शासन, प्रशासन, ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान में हिंदी और अन्य भाषाओं को उपयोग करने का संकल्प नहीं लेते हैं तब तक देश की क्षमताओं का पूर्ण उपयोग संभव नहीं है। गृह मंत्री ने इस दौरान यह भी कहा कि भाषा क्षमता की परिचायक नहीं है और क्षमता किसी भाषा की मोहताज नहीं है। उन्होंने देश की भाषाओं को भारतीय संस्कृति का प्राण बताया और कहा कि मौलिक चिंतन की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति स्वभाषा में ही हो सकती है। इस सम्मेलन में देश की भाषाओं को संस्कृति, परंपरा और साहित्य की भाषा बनाने पर जोर दिया गया।

वास्तव में सरकार द्वारा हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने पर जोर दिया जा रहा है। नई शिक्षा नीति, 2020 में भी स्थानीय और हिंदी भाषा पर जोर दिया गया है जो इस सरकार की मंशा को दर्शाता है। द्वितीय राजभाषा सम्मेलन के बाद मध्य प्रदेश सरकार ने मेडिकल शिक्षा हिंदी में देने का निर्णय लिया और इसके लिए हिंदी में पुस्तकों को तैयार कराया। मध्य प्रदेश के तुरंत बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने भी मेडिकल और इंजीनियरिंग की पढ़ाई हिंदी में कराने की घोषणा की है। इन राज्य सरकारों द्वारा उठाए गए कदम सराहनीय हैं। अगर दृढ़ निश्चय के साथ देश के अन्य राज्य भी पढ़ाई से लेकर शासन, प्रशासन में हिंदी और अन्य भाषाओं को अपनाते हैं तो निश्चित रूप से इसका देश पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा।

‘दक्षिण ध्वनि’ के इस अंक पर अपने सुझाव और प्रतिक्रिया अवश्य भेजें।

(डॉ.दीनानाथ सिंह)



क्रम सं.	विषय	श्री/श्रीमती	पृष्ठ सं.
1.	आपका अपना फ्री एसिस्टेंट:गूगल एसिस्टेंट	संजय कुमार	1
2.	गीतकार गुलज़ार	डॉ. दीनानाथ सिंह	9
3.	आजादी का अमृत महोत्सव – भारतीय रेल की भूमिका	डॉ.ए.श्रीनिवासन	13
4.	पंजाब	आर.इंदुबाला	17
5.	सावित्रीबाई फुले - भारत की पहली महिला शिक्षिका	आर.जेब सेल्व शांति	19
6.	साईखोम मीराबाई चानू	मोहन	21
7.	भारत की भाषाएं	पी.मधु	23
8.	दंगा (कविता)	अश्विनी कुमार	24
9.	सोशल मीडिया का मानव व्यवहार और समाज पर प्रभाव	बी. नवीना	25
10.	प्लास्टिक प्रदूषण	मनु शिवशंकर	26
11.	आयुष्मान भारत योजना – स्वस्थ भारत की स्वस्थ पहल	रूपा मंडल	28
12.	बेरोजगारी	रजत प्रियदर्शी	31
13.	श्रीमुष्णम	एम.गीता	34
14.	इन्सान खुद से भी प्यार करना सीखें	धर्मराज मीना	36
15.	अम्मा, मैं और हिंदी	वी.जयश्री	37
16.	प्रसाद	एस.बालसुब्रमणियन	38

06.05.2022 - 67 वां रेल सप्ताह समारोह –
राजभाषा चल शील्ड



पालक्काड मंडल



पोत्तनूर कर्मशाला



12.05.2022
तकनीकी संगोष्ठी

01.07.2022 – क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता



पालक्काड मंडल
का मंचन दृश्य



निर्णायक



प्रधान कार्यालय
का मंचन दृश्य



12.08.22 - रेलवे अस्पताल, पेरंबूर
तकनीकी संगोष्ठी
विषय: शिशु स्वास्थ्य एवं पोषण



30.08.2022 भगवतीचरण वर्मा
पर स्मृति प्रसंग

राजभाषा उत्सव - 2022



19.07.22 - टिप्पण व प्रारूप
लेखन प्रतियोगिता



26.07.22 - वाक् प्रतियोगिता



27.07.22 - हिंदी टंकण प्रतियोगिता



27.07.22 - हिंदी निबंध प्रतियोगिता 06.09.22 - हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता



01.09.22 - हिंदी गायन प्रतियोगिता

राजभाषा उत्सव - 2022



14.09.22
प्रश्नमंच
प्रतियोगिता



15.09.22
स्मरण शक्ति
प्रतियोगिता



20.09.22 पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता



27.09.22 शब्द शक्ति प्रतियोगिता

हिंदी कार्यशाला



14.10.22



07.12.22

क्षेत्रीय हिंदी प्रतियोगिताएं – 16.12.2022



आपका अपना फ्री एसिस्टेंट: गूगल एसिस्टेंट

संजय कुमार

अध्यक्ष, रेल भर्ती बोर्ड/तिरुवनंतपुरम



एक समय था जब इंटरनेट पर सब चीज़ लिखकर खोजते थे, जिसमें समय ज्यादा लगता था। कुछ समय के अंतराल के बाद अंग्रेज़ी फिल्मों में इन्सानी आवाज़ पर आधारित सर्च देखने को मिला। लेकिन बदलते दौर की आधुनिक तकनीकी द्वारा अब यह सब सच होने लगा है।

आज के तकनीकी युग में हर चीज़ आधुनिक होती जा रही है, जैसे पहले जहाँ टाइपिंग के लिए टाइपराइटर का प्रयोग होता था, लेकिन अब टाइपराइटर की जगह लैपटॉप कंप्यूटर ने ले ली है। यहाँ तक कि लोग अब मोबाइल से भी टाइपिंग करने लगे हैं।

वहीं इंटरनेट से किसी भी प्रकार की जानकारी को प्राप्त करने के लिए हम ज्यादातर गूगल सर्च इंजन का इस्तेमाल करते हैं जिसमें हमें किसी भी जानकारी को खोजने के लिए अपने प्रश्नों को टाइप करना पड़ता है और फिर गूगल में सर्च करना होता है।

यह प्रक्रिया वैसे तो आसान है, लेकिन बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो लिखने में असमर्थ हैं या यूँ कहे लिखना नहीं चाहते हैं। ऐसे ही लोगों के लिए गूगल एक वायस कमांड लेकर आया है जिसे हम गूगल एसिस्टेंट के नाम से जानते हैं।

आजकल हर कोई, किसी काम के लिए कम मेहनत और समय की बचत करना चाहता है। इसी दिशा में वैयक्तिक वायस एसिस्टेंट हर एक मोबाइल और कंप्यूटर उपयोगकर्ता के लिए उपयोगी हो रहा है जो वायस कमांड के रूप में कार्य करता है। यानी बिना फोन को छुए किसी को कॉल करना, गूगल सर्च करना, अलार्म लगाना, चुटकुला सुनना, एस.एम.एस भेजना, म्यूजिक प्ले करना जैसे सभी फीचर का उपयोग एक वायस कमांड के द्वारा वायस एसिस्टेंट एप्लीकेशन से आसानी से कर सकते हैं।



गूगल एसिस्टेंट क्या है?

गूगल एसिस्टेंट, गूगल द्वारा विकसित एक वर्चुअल एसिस्टेंट सॉफ्टवेयर एप्लीकेशन है जो मुख्य रूप से मोबाइल और होम ऑटोमेशन डिवाइस पर उपलब्ध है जिसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधार पर बनाया गया है।

उपयोगकर्ता मुख्य रूप से प्राकृतिक आवाज के माध्यम से गूगल सहायक के साथ बातचीत करते हैं, हालांकि इसमें की-बोर्ड इनपुट भी है। उपयोगकर्ता जवाब देने, इवेंट और अलार्म शेड्यूल करने, अपने डिवाइस पर हार्डवेयर सेटिंग एडजस्ट करने, गूगलखाते से जानकारी लेने, गेम खेलने और बहुत कुछ करने में सक्षम हैं। गूगल ने यह भी घोषणा की है कि सहायक डिवाइस के कैमरे के माध्यम से वस्तुओं की पहचान करने और दृश्य जानकारी एकत्र करने में भी सक्षम होगा और उत्पादों की खरीद और पैसे भेजने में सहायता करेगा।

गूगल एसिस्टेंट एक तरह का Online Virtual सहायक है जो हमें बिना फ़ोन को छुए बोल कर हमारे फ़ोन में उस काम को कर देता है। यह ऐप उन लोगों के लिए बहुत ही फायदेमंद है जो खास तौर से शारीरिक रूप से अक्षम हैं।

“गूगल एसिस्टेंट ऐप”, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं सामान्य भाषा प्रोसेसिंग (NLP) पर आधारित है। यह कमांड सुनकर समझ लेता है कि उसका मतलब क्या है। साथ ही देख लेता है कि यूजर को क्या चाहिए और इन सब बातों को एक जगह श्रेणीगत कर लेता है और उसका जवाब देता है। यह एक उच्च तकनीक है जिसे आप एक व्यक्तिगत आवाज़ सहायक की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं।

वास्तव में इसे “गूगलनाउ”का विस्तार भी माना जा सकता है। “गूगल एसिस्टेंट” से आप किसी भी प्रकार की जानकारी हासिल कर सकते हैं। इसे खास तौर पर मोबाइल फ़ोन और स्मार्ट होम डिवाइस में वायस कमांड को अधिक सुविधाजनक बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। गूगल एसिस्टेंट की तरह एप्पल का सीरी और माइक्रोसॉफ्ट का कार्टाना भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर काम करने वाले एसिस्टेंट हैं। अगर आप गूगल एसिस्टेंट से कहेंगे कि हेलो गूगल एसिस्टेंट कैसे हो? तो आपको जवाब आएगा कि “मैं ठीक हूँ, आप कैसे हैं”?

गूगल एसिस्टेंट का इतिहास:

गूगल ने सबसे पहले गूगल वायस सर्च सुविधा प्रदान की जो एन्ड्राइड स्मार्टफोन और क्रोम डेस्कटॉप कंप्यूटर के लिए सन् 2011 में बनाया गया था। गूगल एसिस्टेंट की शुरुआत गूगल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (CEO) श्री सुंदर पिच्ची द्वारा सन 2016 में ऑफिशियल उपयोग के लिए की गई थी और तब से तेज़ी से इसका उपयोग हो रहा है। फिलहाल गूगल सहायक 1 बिलियन से अधिक उपकरणों पर 90 से अधिक देशों और 30 से अधिक भाषाओं में उपलब्ध है।

गूगल एसिस्टेंट कैसे काम करता है?

यह आपके वायस कमांड पर काम करता है। जैसे ही आप “ओके गूगल” या “हे गूगल” बोलते हैं तो गूगल एसिस्टेंट एक्टिवेट हो जाता है और उसके बाद आप जो कुछ भी करना चाहते हैं आपको उसे बोल कर कमांड देना होता है और

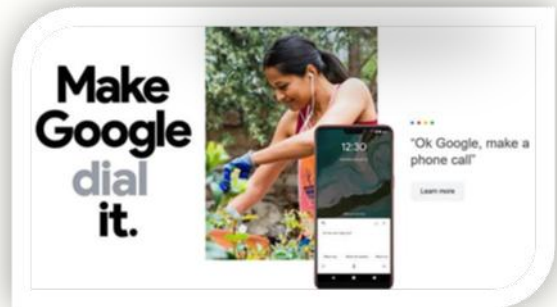
आपके कमांड के आधार पर गूगल



एसिस्टेंट प्रतिक्रिया करता है। उदाहरण के लिए यदि आप मौसम का हाल जानना चाहते हैं, तो आपको सबसे पहले अपने फ़ोन में 'ओके गूगल' या 'हे गूगल' बोलना होगा। आप जैसे ही ये शब्द बोलते हैं, गूगल एसिस्टेंट एक्टिवेट हो जायेगा। उसके बाद आपको "मौसम का हाल" बोलना होगा और गूगल एसिस्टेंट आपको मौसम का हाल बता देगा।



गूगल एसिस्टेंट की वायस नियंत्रित कमांड 'ओके गूगल', 'हे गूगल' का ही विस्तार है। आप गूगल एसिस्टेंट को हिंदी में उपयोग करने के लिए हिंदी भाषा का विकल्प चुन सकते हैं और अपने मोबाइल के होम बटन को दबाकर उसमें बोलकर आप कोई भी जानकारी या कोई पर्सनल काम जैसे अलार्म सेट करना, मीटिंग के लिए रिमाइंडर लगाना, किसी मित्र को कॉल लगा देना जैसे कई काम आप गूगल एसिस्टेंट से करवा सकते हैं। गूगल एसिस्टेंट एक पर्सनल रोबोट की तरह है जो आवाज़ और लिखित दोनों तरह के कमांड को स्वीकार करता है।



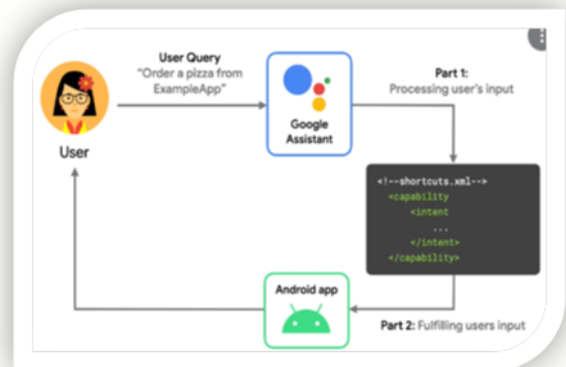
गूगल एसिस्टेंट से फ़ोन को बिना छुए बस आवाज़ की मदद से काम करवाना

- अगर आपको कॉल लगाना है तो आपको बोलना होगा: "ओके गूगल, कॉल महेश"
- SMS करना है तो आपको बोलना होगा : "ओके गूगल, Text प्रीतम"
- वीडियो देखना है तो आपको बोलना होगा : "ओके गूगल, Open YouTube"
- Gallery देखनी है तो आपको बोलना होगा : "ओके गूगल, Open Gallery"
- Alarm लगाना है तो आपको बोलना होगा : "ओके गूगल, Set an Alarm for 4 Am."
- Reminder लगाना है तो आपको बोलना होगा : "ओके गूगल, Set a Reminder To Pick Mahesh from Office At 6 Pm."

एसिस्टेंट ऐप हमें थोड़ा एक्टिव रहने के लिए सामान्य मानव जैसे नोटिफिकेशन देता रहता है जैसे कि:

- गुड मॉर्निंग
- गुड आफ्टरनून
- फीलिंग हंगरी? ऑर्डर फूड.
- गुड इवनिंग
- हैप्पी बर्थ डे

अगर आपके घर में स्मार्ट उपकरण लगे हुए हैं तथा वे इंटरनेट से जुड़े हैं तो आप इन उपकरणों को कहीं से भी एसिस्टेंट की मदद से नियंत्रित कर सकते हैं जैसे -



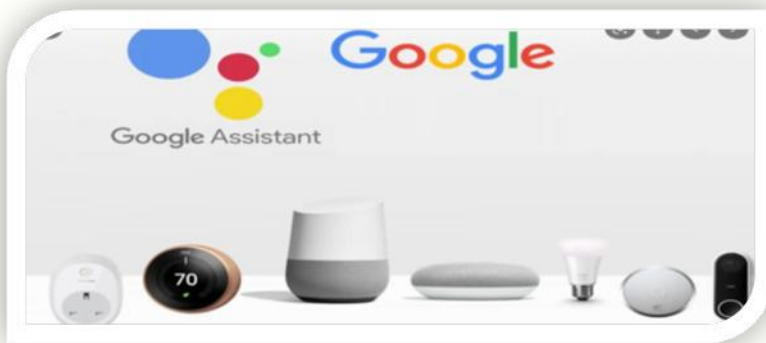
- Turn Off Lights/ Fan/ Tv/ AC.
- Turn Off Rest Room's Lights.
- Turn Off Balcony Fans.

गूगल एसिस्टेंट क्या-क्या कर सकता है ?

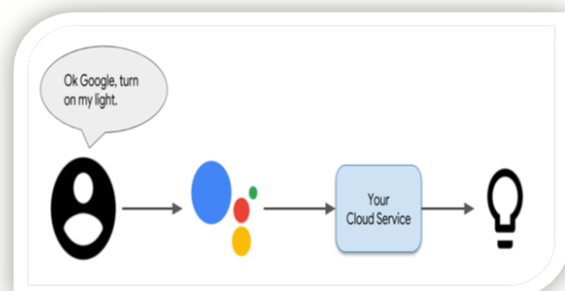
गूगल एसिस्टेंट क्या-क्या काम कर सकता है उसके कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

- आपके स्मार्ट उपकरण और स्मार्ट होम का नियंत्रण
- रेस्तरां बुकिंग से लेकर दिशाओं, मौसम और समाचारों तक ऑनलाइन जानकारी प्राप्त करना
- म्यूजिक या मूवी प्ले करना
- किसी को कॉल लगाना ।
- यह आपके फ़ोन की नोटिफिकेशन को पढ़ सकता है और किसी भी ऐप को ओपन कर सकता है।
- वास्तविक समय (रीयल टाईम)में बोली जाने वाली भाषा का अनुवाद कर सकता है।
- आपके कैलेंडर्स और दूसरी वैयक्तिक सूचना को access कर सकता है।
- कन्टेन्ट में प्ले कर सकता है आपके क्रोमकास्ट या दूसरे compatible उपकरण में।
- टाइमर और रिमाइंडर का काम कर सकता है।
- आपके लिए appointments बुक कर सकता है और मैसेज भी भेज सकता है।
- फोन में ऐप को खोल सकता है।
- आपके लिए नोटिफिकेशन पढ़ सकता है।
- ऑनलाइन इन्फरमेशन सर्च कर सकता है।
- बिना टाइप किए मैसेज भेज सकता है।

गूगल अलग-अलग लोगों के लिए वॉयस प्रोफाइल की पहचान भी कर सकता है, इसलिए यह जानता है कि कौन किससे बात कर रहा है और तदनुसार प्रतिक्रियाओं को दर्ज कर सकता है। आप एक ही समय में कई चीजों के संबंध में पूछ सकते हैं। आपको बार- बार 'हे गूगल' या 'ओके गूगल' नहीं बोलना पड़ेगा। किस तरह के उपकरण में गूगलएसिस्टेंट काम करता है?



गूगल एसिस्टेंट को सबसे पहले गूगल के पिक्सेल स्मार्ट फोन में लागू किया गया था। उसके बाद गूगल होम में धीरे- धीरे इसे सभी आधुनिक एन्ड्राइड उपकरणों में भी लागू कर दिया गया । गूगल एसिस्टेंट को Wear OS devices तथा एन्ड्राइड TV पर भी लगाया गया है। चलिए उन सभी उपकरणों के बारे में जानने की कोशिश करते हैं जहाँ गूगल

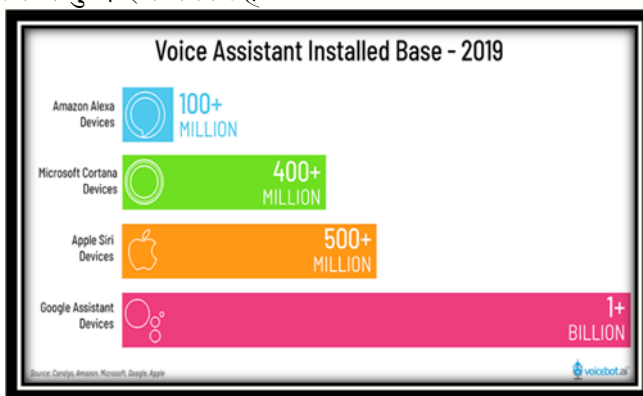


एसिस्टेंट को लागू किया गया है या जो इसे सपोर्ट करते हैं-

- i. **गूगल होम उपकरण(Google Home Devices):-**गूगल होम एक Chromecast-enabled स्पीकर होता है जो एक वायस-नियंत्रित एसिस्टेंट की तरह काम करता है।
- ii. **एन्ड्राइड वेयर (Android Wear) :-** गूगल एसिस्टेंट गूगल की एन्ड्राइड Wear 2.0 में अपडेट किया गया है जिससे अब प्रायः सभी एन्ड्राइड Wears में गूगल एसिस्टेंट का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- iii. **एन्ड्राइड टी.वी (Android TV) :-** गूगल एसिस्टेंट एन्ड्राइड TV में भी लगाया गया है।
- iv. **हेडफोन्स एंड इयरबड्स (Headphones & earbuds):-** अभी बहुत से वायरलेस हेडफोन में गूगल एसिस्टेंट की सुविधा प्रदान की जाती है। गूगल की अपनी Pixel Buds गूगल एसिस्टेंट की सुविधा प्रदान कर सकती है। अब तो बहुत से brands जैसे Harman, JBL, Sony इत्यादि में भी ये सुविधा प्रदान की जाती है।
- v. **गूगल स्मार्ट डिस्प्ले (Google Smart Displays):-** बहुत से गूगल स्मार्ट डिस्प्ले में एसिस्टेंट उपलब्ध रहता है। JBL और Lenovo जैसी कंपनियों में इसकी शुरुआत भी हो चुकी है।
- vi. **कार में(गाड़ी में):-**गूगल एसिस्टेंट की सुविधा अब कुछ कार या गाड़ियों में भी उपलब्ध होने वाली है। इसे एन्ड्राइड Auto infotainment systems के माध्यम से Audi और Volvo जैसी गाड़ियों में सीधे इन्स्टॉल किया जा सकता है।
- vii. **स्मार्ट होम उपकरणों और एप्लायन्स (Smart Home Devices and Appliances)में:-** आजकल घरों में ऐसे बहुत से स्मार्ट उपकरणों का इस्तेमाल होता है जिनमें एसिस्टेंट की compatibility प्रदान की जाती है, जैसे स्मार्ट लाइट बत्ती, स्मार्ट स्पीकर, स्मार्ट लॉक, स्मार्ट टीवी इत्यादि।

गूगल एसिस्टेंट का विकल्प:

गूगल एसिस्टेंट वैसे तो अपने आप में पूर्ण रूप से विकसित है लेकिन आज की व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता में कंपनियां अपना-अपना एसिस्टेंट लेकर आयी हैं जो लगभग गूगल एसिस्टेंट की तरह ही काम करते हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं-



- i. **अमेज़न एलेक्सा/Amazon Alexa -** वास्तव में एक पर्सनल एसिस्टेंट है। इसके लिए अमेज़न फायर या अमेज़न एको डिवाइस की जरूरत होती है। एलेक्सा वेब सर्च कर सकती है , स्मार्ट होम स्टफ के साथ इंटीग्रेट कर सकती है और यहां तक कि पिज्जा भी ऑर्डर कर सकती है!

- ii. **बिक्सबी/Biksbi-** सैमसंग का पर्सनल एसिस्टेंट ऐप है। यह केवल सैमसंग उपकरणों पर उपलब्ध है। यह वेब पर खोज करता है, गूगल प्ले से ऐप डाउनलोड करता है और विभिन्न प्रकार के उपलब्ध ऐप के लिए प्रत्यक्ष समर्थन करता है। यह स्मार्ट होम तकनीक का भी समर्थन करता है।
- iii. **डाटा बॉट/Data Bot** - यह व्यक्तिगत सहायक ऐप है। इसमें क्रॉस-प्लेटफॉर्म सपोर्ट भी है। इसमें आपको कुछ बुनियादी व्यक्तिगत सहायक सामग्री, कुछ अनुकूल सुविधाएँ और यहाँ तक कि एक चैटबॉट भी मिलता है।
- iv. **एक्सट्रीम/Extream** - यह भी एक निजी सहायक ऐप है। यह गूगल खोज की तरह बुनियादी चीजें कर सकता है। सेल्फी लेने, दिशा-निर्देश खोजने और समाचार खोजने में आपकी मदद कर सकता है। यह आपकी गोपनीयता की सुरक्षा पर भी ध्यान देता है। एक्सट्रीम के साथ आपकी सभी बातचीत फोन पर होती है और अगर आप ऐप को अनइंस्टॉल करते हैं तो डेटा अपने आप डिलीट हो जाता है।
- v. **हाउंड/Hound**-यह कोर्टाना के साथ आने वाले व्यक्तिगत सहायक ऐप में से एक है। साउंड हाउंड ने इसे कुछ साल पहले बनाया था। इस ऐप में कैलकुलेटर, होटल बुकिंग के लिए एकीकृत एक्सपीडिया समर्थन, गाना / संगीत की खोज करने वाला साउंडहाउंड नाउ जैसी कुछ उन्नत सुविधाएँ शामिल हैं। आप इंटरैक्टिव गेम भी खेल सकते हैं।
- vi. **रॉबिन/Robin** - यह कॉल करने और एसएमएस भेजने जैसे बुनियादी आदेशों का समर्थन करने वाला ऐप है। यह इशारों का जवाब भी दे सकता है, पार्किंग और ट्रैफिक अलर्ट, गैस की कीमत जैसी कई बातों की जानकारी दे सकता है।
- vii. **माइक्रोसॉफ्ट कॉर्टाना/ Microsoft Cortana** - इसे "डिजिटल एजेंट" भी कहा जाता है। इसे आपके आदेशों से सीखने के लिए डिज़ाइन किया गया है ताकि आप इसका उपयोग करते समय अपने अनुभव को व्यक्तिगत कर सकें। आप अपने प्रश्न टाइप कर सकते हैं या "हे कॉर्टाना!" कहकर कॉर्टाना से बात कर सकते हैं। यह एप्पल और एन्ड्रॉइड विकल्पों के समान ही है। इससे आप पैकेज ट्रैक कर सकते हैं, अपना कैलेंडर प्रबंधित कर सकते हैं या वर्चुअल एसिस्टेंट के साथ चैट कर सकते हैं। कॉर्टाना विंडोज फोन और ऑपरेटिंग सिस्टम सहित Microsoft उपकरणों पर भी उपलब्ध है।
- viii. **सिरी/ Siri**:-एप्पल ने इस वॉयस-एक्टिवेटेड फीचर को 2011 में पेश किया था और वे तब से इसमें फीचर्स जोड़ रहे हैं। सिरी आपके सवाल का जवाब देगा और आपको अपडेट देगा। खाना बनाते समय वह आपको रिमाइंडर देगा और अलार्म या टाइमर सेट करेगा। अपनी आवाज का उपयोग करके टेक्स्ट संदेश भी भेज देगा। यह सभी एप्पल उपकरणों पर अपने आप उपलब्ध है।
- ix. **ए आई वी सी /AIVC**-इस एन्ड्रॉइड ऐप में वाक्-आधारित समर्थन रहता है। कार्य करने, टेक्स्ट या ईमेल लिखने, अलार्म सेट करने, फ़ोन नंबर डायल जैसे कई कामों में यह आपकी मदद करेगा। यह क्षेत्रीय उच्चारण के बावजूद अपनी आवाज़ का उपयोग करता है। लाइट, थर्मोस्टैट या पंखे जैसे घरेलू उपकरणों को तब तक नियंत्रित करता है जब तक कि डिवाइस HTTP-इंटरफ़ेस के माध्यम से एक्सेस किए जा सकते हैं। इस मुफ्त संस्करण में विज्ञापन शामिल हैं।
- x. **लाइरा/Liara**- पर्सनल एसिस्टेंट - यह सरल वॉयस-एक्टिवेटेड एसिस्टेंट है जो ऊपर दिए गए ऐप की तरह कई समान सुविधाएँ प्रदान करता है। स्मार्टफोन, टैबलेट और कंप्यूटर जैसे कई उपकरणों पर एक ही समय बातचीत जारी रखने की अतिरिक्त सुविधा भी इसमें है। इसके निर्माता का दावा

है कि आप लाइरा से किसी भी बोली में बात कर सकते हैं , क्योंकि यह कई भाषाओं, संदर्भ और मंशा को समझने में सक्षम है।

- xi. **बटलरॉय/Butleroy** - इस ऐप का दावा है कि आपके शेड्यूल में खाली समय ढूंढकर 30 सेकंड से कम समय में आपके एपाइंटमेंटों को शेड्यूल करेगा क्योंकि हर साल आप योजना बनाने में 100 घंटे से अधिक का समय गंवा देते हैं। इस प्रकार आपको जीवन जीने के लिए और भी अधिक समय देगा।
- xii. **ड्रैगन मोबाइल एसिस्टेंट/ Dragon Mobile Assistant-** पूरी तरह से वि कसित ड्रैगन मोबाइल सहायक केवल एन्ड्रॉइड पर उपलब्ध है। लेकिन यह ऐसा एसिस्टेंट है जिसपर आप जरूर ध्यान दे सकते हैं। जब आप गाड़ी चला रहे हों तो यह हैंड्स- फ्री (और आंखों से मुक्त) मोड में स्विच करके आपको सुरक्षित रखता है। यह आपके संदेशों और सूचनाओं को पढ़कर आपको अप-टू-डेट रखता है और यह आपके आस-पास संपर्कों को ढूंढकर आपको कनेक्टेड रखता है।
- xiii. **इंडिगो/Indigo** - यदि आप एक ऐसा सहायक ऐप ढूंढ रहे हैं जो सभी डिवाइस के लिए सूट करता हो तो आप इंडिगो का सहारा ले सकते हैं हालांकि यह एक थोड़ा अप्रचलित ऐप है, लेकिन यह आपको मानक सहायकों से अच्छा विकल्प देगा और उनके करीब सभी फीचर उपलब्ध कराएगा।

गूगल एसिस्टेंट के फायदे और नुकसान:

फायदे:

गूगल एसिस्टेंट के पास पेशेवरों के लिए वास्तव में बहुत ही उपयोगी उपकरण हैं और यह आप पर निर्भर करता है कि आप उनका उपयोग कैसे करें। एजेंडा, अलार्म और दिनचर्या बनाने में , अनुस्मारक और नोट्स बनाने में , संदेश और संचार भेजने में, फोन के कार्य और सेटिंग्स करने में , स्थान और यात्रा की प्लानिंग करने में तथा समाचार और वर्तमान घटनाएँ बताने में यह आपकी सहायता कर सकता है। इतना ही नहीं, इस ऐप की मदद से आप अपने घर के हर तरह के स्मार्ट उपकरणों को कहीं से भी कभी भी नियंत्रित कर सकते हैं। इस ऐप की सहायता से आप अपने घर के कैमरा व स्मार्ट लॉक पर निगरानी रख सकते हैं । आप इन उपकरणों के साथ कमांड से जुड़ सकते हैं। आप इस ऐप की मदद से फोन पर हाथ लगाए बिना किसी को भी कॉल कर सकते हैं अथवा उनके कॉल को प्राप्त कर सकते हैं।

नुकसान:

एसिस्टेंट की सबसे बड़ी कमी यह है कि इसके लिए यूजर्स को ढेर सारे डेटा का एक्सेस देना पड़ता है जिससे गोपनीयता खतरे में रह सकता है। जैसे यदि आप चाहते हैं कि एसिस्टेंट आपको कैलेंडर इवेंट की याद दिलाए तो आपको अपने कैलेंडर तक पहुंच प्रदान करनी होगी। यदि आप चाहते हैं कि एसिस्टेंट आपको याद दिलाए कि आपके इवेंट के लिए कब निकलना है तो आपको अपने स्थान तक पहुंच प्रदान करनी होगी। यदि आप चाहते हैं कि एसिस्टेंट आपके लिए मैसेज भेजे तो आपको इसे एसएमएस कंट्रोल देना होगा। यदि आप चाहते हैं कि एसिस्टेंट आपकी लाइटें चालू करे तो आपको उसके लिए एक्सेस देना होगा। और तो और यह इंटरनेट के बिना काम नहीं करेगा और फिलहाल हिन्दी पूरी तरह से समर्थित नहीं है। इससे अधिकतम बैटरी का उपयोग होता है जिससे मोबाइल जल्दी गर्म हो जाता है और इन सबसे मो बाइल डेटा का बहुत ज्यादा उपयोग होता है।

गूगल एसिस्टेंट का भविष्य:

वैसे गूगल एसिस्टेंट में ऐसे बहुत से फीचर्स लाए गए हैं जो की उपयोगकर्ता के लिए बहुत ही फायदेमंद हैं। गूगल आगे भी इसमें बहुत से आधुनिक फीचर्स लाने वाला है और इसके सहायक के साथ डूप्लेक्स फीचर्स जोड़ देने वाला है। Duplex एक ऐसा फीचर है जो एसिस्टेंट को बिजनेस के उद्देश्य से कॉल करने में काम आएगा। यह आपकी तरफ से appointments भी बुक करा सकता है तथा यह सामान्य वार्तालाप प्रश्न का जवाब भी दे सकता है और उसके रियल टाइम में alterations भी ला सकता है। साथ ही ये filler words जैसे “um-hm” का भी इस्तमाल कर सकता है। यह इतना ज्यादा वास्तविक (real)होने

वाला है कि लोगों को गूगल एसिस्टेंट और Real लोगों के बीच का अंतर का पता करना भी मुश्किल हो जाएगा। यह Duplex feature गूगल एसिस्टेंट के नये दौर की तो बस एक शुरुआत है। हमें आगे देखना है कि गूगल इसमें ऐसे कौन-से नए features लाने वाला है जो कि इसकी एआई(AI) को और अधिक बेहतर करने वाला है।

गूगल के अनुसार भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता इतनी विकसित हो जायेगी कि यह आपके दैनिक कार्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे बड़ा उदाहरण “सोफ़िया रोबोट” के रूप में हमारे सामने है।

निष्कर्ष:

इन सभी बेहतरीन सुविधाओं के लिए हमें गूगल के गूगल एसिस्टेंट को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि आज उसी के कारण प्रत्येक एन्ड्राइड उपयोगकर्ता एन्ड्राइड एसिस्टेंट का लुत्फ उठा पा रहा है। एक एन्ड्राइड उपयोगकर्ता के लिए इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है कि केवल वायस कमांड से ही गूगल एसिस्टेंट आपके एक सहायक की तरह काम करे। गूगल की एआई ने हम लोगों को बहुत आधुनिक बना दिया है जिससे ये हमारे सभी उपकरणों के साथ आसानी से जुड़ पा रहे हैं। अब तो ये हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन गये हैं।

गूगल एसिस्टेंट हमेशा आपकी सेवा में है और इसे कभी भी नींद या वेतन की आवश्यकता नहीं होगी। यह आपसे कभी एक दिन की छुट्टी भी नहीं मांगेगा। गूगल एसिस्टेंट, एन्ड्राइड और iOS दोनों डिवाइस पर गूगल मैप में नेविगेट करने में आपकी मदद कर सकता है। अपनी आवाज़ से, आप अपने प्रिय मित्रों और परिवार के साथ अपने विचारों को साझा कर सकते हैं, टेक्स्ट का जवाब दे सकते हैं, संगीत और पॉडकास्ट चला सकते हैं, अपने मार्ग और स्थान की खोज कर सकते हैं या गूगल मानचित्र में एक नया स्टॉप जोड़ सकते हैं। गूगल एसिस्टेंट की सबसे खास बात यह है कि इसे संवादी होने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसका मतलब है कि आप एक प्रश्न पूछ सकते हैं और फिर कई बार अनुवर्ती प्रश्न पूछ सकते हैं और यह बातचीत का प्रत्येक रिकॉर्ड लेता है और सही जानकारी के साथ श्रव्य रूप से प्रतिक्रिया करता है।

आजकल गूगल एसिस्टेंट करीब 90 देशों की 31 से अधिक भाषाओं में काम कर रहा है। इसके मासिक ग्राहकों की संख्या 500 मिलियन से भी अधिक है। गूगल एसिस्टेंट अब नए स्मार्ट डिस्प्ले, स्पीकर, हेडफोन, साउंडबॉर और मोबाइल फोन जैसे उपकरणों के अनुकूल बना है।

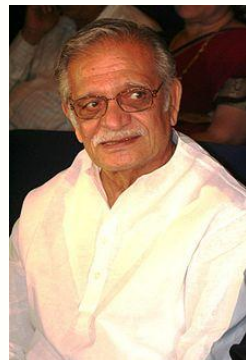
दोस्तो, जिस प्रकार से अभी तक गूगल एसिस्टेंट की तकनीक के इस्तेमाल से नए गैजेट्स और घरेलू उपकरण में कमाल हो रहा है, उस हिसाब से आने वाले समय में हमारे आस पास की सभी चीजें सिर्फ और सिर्फ वायसकमांड से ही चलने लगेंगी जो किसी जादू से कम नहीं होगा।



गीतकार गुलज़ार

डॉ. दीनानाथ सिंह
उप महाप्रबंधक/ राजभाषा

प्रसिद्ध शायर, गीतकार, कथाकार, फिल्मी पटकथा लेखक, नाटककार, फिल्म निर्माता, संवाद लेखक, फिल्म निर्देशक, साहित्यकार और सिनेमा के हर क्षेत्र में विशेष पहचान बनाने वाले व्यक्ति का नाम है गुलज़ार। जीवन के अनुभवों को शब्दों में पिरोने और उस पर जादुई रंग चढ़ाने में जो दक्षता इन्हें प्राप्त है वह अतुलनीय है। भारतीय फिल्म के सबसे बड़े पुरस्कार, दादा साहब फाल्के पुरस्कार से सम्मानित गुलज़ार ऐसी हस्ती हैं जिन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है। इन पुरस्कारों में हॉलीवुड का ऑस्कर पुरस्कार, ग्रैमी पुरस्कार, 21 बार फिल्म फेयर पुरस्कार, कौमी एकता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार जैसे कई पुरस्कार शामिल हैं। इनके अलावा इन्हें भारत का तीसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान पद्म भूषण भी प्राप्त हो चुका है। इन पुरस्कारों की लंबी सूची ही गुलज़ार के बारे में सबकुछ बता देती है।



गुलज़ार का असली नाम संपूरन सिंह कालरा है। इनका जन्म 18 अगस्त, 1934 को अविभाजित भारत के पंजाब के झेलम जिला के दीना गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम माखन सिंह कालरा था जो छोटा-मोटा कारोबार करते थे। इनकी मां का देहांत तब हो गया जब ये दूध पीते बच्चे थे। सौतेली मां का व्यवहार इनके साथ अच्छा नहीं होता था, अतः ये अपना ज्यादा समय अपने पिता की दुकान पर बिताते थे। वैसे इन्हें पढ़ाई में कोई रुचि नहीं थी और इंटरमीडियट में फेल भी हुए किंतु इन्हें उसी उम्र से साहित्य और साहित्यकारों में बड़ी रुचि थी। उन आरंभिक दिनों में इनके पसंदीदा साहित्यकार रवीन्द्रनाथ ठाकुर और शरतचंद्र हुआ करते थे। ये उन दिनों इनकी कहानियों और उपन्यासों में डूबे रहते थे और बंगला साहित्य का भरपूर आनंद लेने के लिए बंगला भी सीखने की कोशिश कर रहे थे।

देश के विभाजन के दर्द को झेलता हुआ इनका परिवार पाकिस्तान के पंजाब से आकर अमृतसर में रहने लगा। फिर वहां से ये लोग दिल्ली आ गए। परिवार का बोझ उठाने में असमर्थ इनके पिता ने इन्हें एक पेट्रोल पंप पर काम में लगाया। इसी तरह से रोजगार की तलाश में भटकते गुलज़ार मुंबई आ गए और एक कार मरम्मत करने वाली दुकान पर मिस्त्री के रूप में काम करने लगे। उन्हीं दिनों इनकी मुलाकात उस समय के जाने-माने गीतकार शैलेंद्र से हुई। शैलेंद्र ने इन्हें गीत लिखने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया। उसी दौरान बिमल राय की फिल्म 'बंदिनी' बन रही थी और शैलेंद्र से अनबन होने कारण बिमल राय ने उस फिल्म के लिए सिचुएशन समझकर गीत लिखने को कहा। उस फिल्म के लिए गुलज़ार ने “मोरा गोरा अंग लई ले, मोहे श्याम रंग दई दे” लिखा। यह गाना एस.डी. बर्मन और बिमल राय को बहुत पसंद आया और वह गाना मशहूर हुआ। बिमल राय ने इनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें मोटर गराज की नौकरी से छुड़ाकर अपना असिस्टेंट बना दिया। बिमल राय के इस व्यवहार से भावुक होकर गुलज़ार रो पड़े थे।

उन्होंने हर तरह के गीत लिखे हैं। उनके गीत पर कभी बच्चे खेलते हैं, मस्ती करते हैं तो युवा प्रेम की रंगीन दुनिया में डूब जाते हैं।

1982 में बनी फिल्म 'मासूम' का यह गाना भला किसे अच्छा नहीं लगता है। बच्चे- बड़े-बूढ़े सभी इस गीत को आज भी गुनगुनाते हैं :-

लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा
घोड़े की दुम पे जो मारा हथौड़ा
दौड़ा दौड़ा दौड़ा घोड़ा दुम उठा के दौड़ा।

इसी तरह 1990 के 'मोगली' सीरियल के लिए उनका यह बालगीत भी काफी प्रसिद्ध हुआ
जंगल जंगल बात चली है पता चला है।

अरे! चट्टी पहन के फूल खिला है।

इस तरह उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि गंभीर विषयों सहित उन्हें बाल मनोविज्ञान की भी अच्छी समझ है और कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जिस पर वह नहीं लिख सकते हैं। 1971 में बनी फिल्म 'गुड्डी' के लिए लिखा गया उनका बच्चों के लिए यह प्रभात गान भी काफी प्रसिद्ध हुआ –

हम को मन की शक्ति देना, हम विजय करें !

दूसरों की जय से पहले खुद को जय करें !

वर्ष 2002 में रिलीज फिल्म 'मकड़ी' जिसे शिकागो अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह में दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ था का यह प्रसिद्ध गाना भी गुलज़ार ने ही लिखा था-

ओ पापड़ वाले पंगा ना ले

थप्पड़ बजेगा पंगा ना ले

गुलज़ार ऐसे महान शख्सियतों में शामिल हैं जिन्होंने अपने चाहने वालों को गीतों के साथ- साथ आवाज़ का भी उपहार दिया है। संगीतकार वि शाल भारद्वाज और गायक सुरेश वाडेकर के साथ 'इन बूढ़े पहाड़ों पर' नामक एक एलबम आया था। इस एलबम को शीर्षकगीत सुरेश वाडेकर के साथ गुलज़ार ने प्रस्तुत किया था। इस गीत को सुनकर जहाँ कश्मीर के प्रति हमारा प्रेम उमड़ता है , वहीं दूसरी ओर इसका दूसरा स्याह पक्ष भी दीखता है जहाँ खौफ है, खामोशी है -

इन बूढ़े पहाड़ों पर कुछ भी तो नहीं बदला

सदियों से गिरी बर्फ

और उन पे बरसती हैं

हर साल नई बर्फें

इन बूढ़े पहाड़ों पर कुछ भी तो नहीं बदला

घर लगते हैं कब्रों से

खामोश सफेदी में

इसके अलावा उनकी आवाज़, शास्त्रीय संगीत की मशहूर गायिका शुभा मुद्गल के साथ 'पिया तोरा कैसा अभिमान' में भी उनके प्रशंसकों को सुनने को मिली जिसे फिल्म 'एक बसेरा' में लिया गया था। गुलज़ार ऐसे महान रचनाकारों में शामिल हैं जिनकी रचनाओं के प्रत्येक शब्द सरल होते हुए भी स्वयं बोलते रहते हैं। वे अपने शब्दों के जादू से पाठकों या श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं जो उनके गीतों को बार-बार सुनना चाहते हैं या रचनाओं को बार- बार पढ़ना चाहते हैं।

जब हम गुलज़ार के रचना संसार पर नज़र डालते हैं तो उनके द्वारा चयनित शब्दों का सम्मोहन सर्वप्रथम हमारा ध्यान आकर्षित करता है और हम उनकी सम्मोहन शक्ति से आकृष्ट हो जाते हैं। हम यह सोचने लगते हैं कि हमारे मानस पटल पर छा जाने वाले सरल , अर्थपूर्ण, प्रवाहमय चित्र उकेरने वाले शब्दों की मोती को चुनने और उन्हें खूबसूरती से पिरोने की अद्वितीय कला आखिर उन्हें मिली कहां से। इसका सीधा- सादा उत्तर है कि यह कला न तो उन्हें विरासत में मिली और न किसी स्कूल या कॉलेज में। यह कला उन्हें जिंदगी की कठिनाई और संघर्षपूर्ण स्थितियों ने सिखाई। जिंदगी के हर तरह के अनुभवों के अनमोल मोती और रत्न को वे अपनी झोली में



डालते चले गए। इस तरह जीवन के कटु-मधु अनुभवों से अर्जित शब्द संपदा उनकी अमूल्य निधि बन गई हैं जिनका प्रयोग वे अपेक्षित स्थिति का चित्र खींचने और उसे अर्थपूर्ण बनाने के लिए करते हैं।

जैसाकि ऊपर लिखा गया है उनका बचपन बहुत उथल-पुथल और संघर्ष भरा रहा है। देश के विभाजन का खामियाजा उनके घर, परिवार के साथ-साथ लाखों लोगों को झेलना पड़ा है। वह दर्द भी अलग-अलग रूपों में समय-समय पर उनकी लेखनी ने बयां की है-

जिक्र झेलम का है बात देने की।

चांद पुखराज का, रात पश्मीने की।

कैसे ओढ़ेगी, उधड़ी हुई चांदनी

रात कोशिश में है चांद सीने की

कोई ऐसा गिरा है नज़र से कि बस

हमने सूरत न देखी फिर आइने की।

इसी तरह उन्होंने समाज और मानवता के दुश्मनों को भी इंसानियत और सभ्य समाज को अंगूठा दिखाते और मुँह चिढ़ाते देखा है। क्या इससे बड़ी भी कोई विडंबना हो सकती है-

जला के फूला नहीं समाता जो बस्तियों को

वह रू-सियाह आसमान को छूने लग गया है

धुएं के चोले पे खून के दाग भी है

परिवार में उनकी सौतेली माँ का व्यवहार भी उनके व्यक्तित्व को खंडित करता रहा। बचपन की अनुभूतियाँ हमारे व्यक्तित्व और संवेदनाओं को आजीवन प्रभावित करती रहती हैं। तभी तो गुलज़ार की काग़ज की कश्ती भी डरी हुई, सहमी हुई है-

चौक से चलकर, मंडी से, बाज़ार से होकर

लाल गली से गुजरी है, काग़ज की कश्ती

बारिश के लावारिस पानी में बैठी बेचारी कश्ती

शहर की आवारा गलियों में सहमी-सहमी पूछ रही है

कश्ती का साहिल होता है

मेरा भी कोई साहिल होगा.....

गुलज़ार का बचपन चाहे जैसा रहा हो, उन्होंने भले ही अनेक दुखों और संघर्षों को झेला हो, लेकिन गुलज़ार एक अत्यन्त जिंदादिल इंसान हैं। उन्होंने भले ही अपना गुजर-बसर करने के लिए गराज में काम किया किंतु उनका सृजन कमाल का है। उन्होंने न केवल फिल्मों के लिए गीत लिखा बल्कि अपने जमाने के मशहूर सिनेमा निर्माता-निर्देशक बिमलराय और ऋषिकेश मुखर्जी के साथ पहले उनके सहायक के तौर पर काम किया और उसके बाद उन्होंने साबित कर दिया कि वे बॉलीवुड की किसी भी हस्ती से किसी मामले में कम नहीं हैं। मेरे अपने, परिचय, आंधी, मौसम, इजाजत, लेकिन, हु तू तू जैसी फिल्मों का स्वतंत्र रूप से सफल निर्देशन कर उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इतना ही नहीं, अपने द्वारा निर्देशित बहुत सारी फिल्मों की पटकथाएं और संवाद भी उन्होंने स्वयं ही लिखीं और हिन्दी फिल्मी दुनिया में अपना स्थान स्वयं बनाया।

जहाँ तक गीतकार गुलज़ार का प्रश्न है, उनके गीतकार बनने की राह भी आसान नहीं थी। जिस जमाने में उन्होंने हिन्दी सिनेमा के लिए गीत लिखना शुरू किया उस समय शैलेंद्र, साहिर लुधियानवी, शकील बदायूनी, मजरूह सुल्तानपुरी, आनंद बख्शी जैसे मशहूर और स्थापित गीतकार पहले से ही मौजूद थे। वैसे लोगों के बीच एक गराज में काम करने वाला मिस्त्री का गीतगार बन जाना किस्मत की बात नहीं थी। इसके पीछे गुलज़ार का परिश्रम, प्रतिभा, लगन और उनकी अनवरत साधना थी जिसने उन्हें हिन्दी सिनेमा में गुलज़ार कर दिया। उनकी प्रतिभा को पहचानने और उसे निखारने में सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन, एस. डी. बर्मन, हेमंत कुमार, खय्याम, मदन मोहन, लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, भूपेन हजारिका, विशाल भारद्वाज, ए.आर. रहमान जैसे लोगों का हाथ था। देश के नौजवानों ने भी गुलज़ार के गानों को काफी पसंद किया और इससे उनकी हौसला अफ़जाई होती रही और वे लगातार सफलता की सीढ़ी यों पर

चढ़ते हुए अपनी कलम से शब्दों के सितारे कागज पर उतारते रहे जो स्वरबद्ध होकर देश से विदेश तक गूंजते रहे।

परंतु सबकुछ होते हुए भी उनका व्यक्तिगत जीवन कुछ रीता- रीता, सूना-सूना सा रहा। शुरुआत में वे तत्कालीन सिने जगत की प्रसिद्ध अभिनेत्री मीना कुमारी के संपर्क में आए और दोनों के संबंध परवान चढ़े परंतु मीना कुमारी का स्वास्थ्य कुछ समय बाद बिगड़ गया और बद से बदतर होता चला गया। एक दिन ऐसा भी आया कि वे गुलज़ार क्या, इस दुनिया को अलविदा कह गईं। इस घटना ने गुलज़ार को भीतर तक झकझोर दिया। परंतु समय के साथ गुलज़ार इस सदमे से उबरने लगे। उन्हीं दिनों के सिने जगत की एक और खूबसूरत अभिनेत्री राखी के संपर्क में आए। राखी का परिवार भी पूर्वी बंगाल से विस्थापित होकर भारत आया था। इस दृष्टि से दोनों समान पृष्ठभूमि के थे। दोनों विवाह के बंधन में भी बंध गए। परंतु इन दोनों प्रतिभाओं का संगम ज्यादा दिन तक नहीं टिका। वैचारिक मतभेद और अन्य कारणों के कारण दोनों अलग-अलग रहने लगे। यद्यपि दोनों में आज तक तलाक़ भी नहीं हुआ है, परंतु दोनों का साथ न रहने का दर्द गुलज़ार की कविताओं में कहीं कहीं साफ झलकता है-

मुझको भी तरकीब सिखा यार जुलाहे
अक्सर तुझको देखा है कि ताना बुनते
जब कोई धागा टूट गया या खत्म हुआ
फिर से बांध के
आगे बुनने लगते हो

... ..

मैंने तो बुना था एक ही रिश्ता
लेकिन उसकी सारी गिरहें
साफ नज़र आती हैं यार जुलाहे !

गुलज़ार के गीतों और कविताओं में उनके भीतर का साहित्यकार स्पष्ट दिखाई पड़ता है। प्रतीकों और बिंबों का प्रयोग हर जगह उनकी रचनाओं को नयापन देता है और श्रोता या पाठक उनके सफल प्रयोग से अपने - अपने भावों को सीधे जोड़ लेते हैं और उससे बंध से जाते हैं। उन्होंने चांद, धुआँ, धागा, चूल्हा, पेड़, बताशा, जामुन, पानी की बूंद जैसे प्रतीकों का इतना सफल प्रयोग किया है कि उनका विकल्प असंभव सा प्रतीत होता है।

फिल्म 'नो स्मोकिंग' के गीतों में उपले, सिगरेट और धुएँ के बिंब का प्रयोग उन्होंने बड़े सधे तरीके से किया है जो गीत को अर्थ देने के साथ-साथ उसकी खूबसूरती में भी चार चांद लगा देते हैं-

जब भी सिगरेट जलती है, मैं जलता हूँ
आग पे पाँव पड़ता है, कमबख्त धुएँ में चलता हूँ
फिर किसी ने जलाई दियासलाई

आसमां जल उठा, शाम ने राख उड़ायी

इसी तरह के एक और बिंब का प्रयोग उन्होंने आगे जीवन और उसके राख में तब्दील होने को इस प्रकार दिखाया है जो ढलती जिंदगी और उसकी होती शाम के लिए है-

“उपले जैसा जलता हूँ, कमबख्त धुएँ में चलता हूँ”

“प्यास उधड़ी हुई है, होंठ छिलने लगे हैं

शाम होने लगी है, लाल होने लगी है”

इस तरह उनके गीतकार रूप पर कभी साहित्यकार भी हावी हो जाता है तो कभी दोनों साथ-साथ चलते दिखाई देते हैं। वास्तव में गुलज़ार को प्रसिद्धि उनके गीतों ने दिलायी लेकिन उनके सृजन का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत है। उनकी कविताओं और कहानियों को भी उत्कृष्ट कोटि के साहित्य में रखा जाता है।

आजादी का अमृत महोत्सव- भारतीय रेल की भूमिका

डॉ.ए.श्रीनिवासन

राजभाषा अधिकारी,मद्रै मंडल

अमृत महोत्सव की पृष्ठभूमि:

आज के अधिकांश भारतवासी स्वतंत्रता के बाद जन्मे हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु किए गए परिश्रम, त्याग, बलिदान, भुक्त दंड, सख्त कारावास, गुलामी प्रथा आदि से परिचित नहीं हैं या केवल किताबी ज्ञान ही रखते हैं। इंटरनेट, फोन आदि आधुनिक साधन सुलभ एवं सहज मिल जाने के कारण संचार माध्यम की कठिनाइयाँ उन्हें मालूम नहीं। कुछ देशों की तरह अनिवार्य सैनिक सेवा का भी प्रावधान यहाँ नहीं है। इंटरनेट से दुनिया मुट्ठी में आ गई है, इसलिए सोचते हैं कि वाकई दुनिया मुट्ठी में है। पर वास्तविकता भूल जाते हैं कि आधुनिक साधन उन्हें स्वतंत्र रूप से सोचने भी नहीं देते हैं। कहा जाता है कि किसी को भ्रमित करना है तो उसे आवश्यकता से अधिक सूचना दे दें। आज की सूचना-क्रान्ति का दुरुपयोग ऐसे ही हो रहा है। देश को बचाना है तो देशभक्ति को जगाना है। हर भारतीय चाहे किसी भी धर्म, जाति, संप्रदाय का हो, यह महसूस करे कि यह मेरा अपना देश है। तभी देश की वास्तविक प्रगति होगी। मेक इन इंडिया, एक भारत-श्रेष्ठ भारत आदि के बाद सरकार आजादी का अमृत महोत्सव लायी है। यह वास्तव में देशभक्ति जगाने का प्रयत्न है। पांच वर्ष पहले तक सर्वत्र स्वच्छता की उपेक्षा करते हुए हमने देखा। आज स्थिति बिल्कुल बदल गई है। आज की स्थिति हमें स्वयं बहुत अच्छी लगती है। अन्य देशों की तरह कड़ी सजा दिये बिना ही भारत बहुत कुछ हासिल कर पाया है। यह अगला कदम है। इस देशभक्ति के यज्ञ में भारतीय रेल ने क्या किया? क्या कर रही है? क्या करेगी? इसे विस्तार से देखेंगे।

गांधी, नेहरू जैसे नेताओं को हर कोई पहचानता है। पर उनके पीछे रहे अनगिनत शर्मा, वर्मा, गुप्ता, दास, आदि को नहीं जानते और उनके बारे में सुने तक नहीं। लेकिन उसी नींव पर खड़े होकर सभी नेताओं ने जय हिंद या वंदे मातरम् का नारा लगाया था। ठीक उसी तरह भारतीय रेल ने बुनियाद मजबूत कर भारतीयों को भारतीय रखने में, बनाने में, स्वतंत्रता संग्राम में, आजादी के पश्चात् के इन वर्षों में भारत को हर क्षेत्र में उन्नत और समृद्ध बनाने में जो भूमिका निभाई है वह अवर्णनीय है। भारतीय रेल बोलती कम करती अधिक है।

रेलवे की भूमिका को निम्नलिखित शीर्षकों के अधीन याद करेंगे और मन ही मन शत-शत नमन करेंगे।

1. भारत के स्वरूप निर्माण में भारतीय रेल की अहम भूमिका
2. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान - देश का मान
3. भारतीय रेल के खेल - देश की शान
4. भारतीय रेल और साहित्य - देश का अभिमान
5. स्वतंत्रता के बाद भारतीय रेल का समर्पण भाव
6. अब भी आगे भी ...
7. निष्कर्ष

भारत के स्वरूप निर्माण में भारतीय रेल की अहम भूमिका

रेल की भाषा मेल की भाषा कहा जाता है। केवल भाषाओं के मिश्रण के रूप में इसे नहीं लेना है। विभिन्न धर्म, जाति, संप्रदाय, सभ्यता, संस्कृति, आचार-विचार, रहन-सहन, वेष-भूषा को समेकित करनेवाले एक बड़े संगठन के रूप में रेल ने काम किया है और कर भी रही है। स्त्री-पुरुष, बच्चे-बड़े, गरीब-अमीर, पंडित-मूर्ख किसी भी प्रकार के भेद-भाव के लिए रेलवे ने कभी स्थान नहीं दिया है। आसेतु हिमाचल अपनी अविनाश यात्रा में मन-मोहक भारत को दर्शाया और साथ-साथ एकता की भावना को जगाया है। जाति की और छुआछूत का बोल-बाला रहते समय भी किसी ने पूछने की हिम्मत नहीं की कि गाड़ी का चालक किस जाति का है, पासवाला यात्री किस प्रदेश का है, प्लेटफार्म पर चाय बेचनेवाला किस धर्म का

है। भारतीय रेल ने रेल यात्रा को ही नहीं बल्कि जीवन यात्रा को भी भली-भांति समझाया कि वह अल्पकालीन है।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ - इस भावना को जगानेवाली और चरितार्थ करनेवाली है - भारतीय रेल।

रेल ने सभी मनुष्यों को एक-समान देखना सिखाया है, सिखा भी रही है। आज भले ही लोग घर में भी साथ रहते हुए अपने-अपने मोबाइल में डूबे रहें पर रेल ने अपने सह-यात्रियों से घुलना-मिलना सिखाया। दो दिन की यात्रा के बाद बिछड़ते समय रोते हुए यात्रियों को कई रेलवे स्टेशनों ने देखा है। निवास स्थान का पता देते हुए घर पधारने का निमंत्रण देने वाले कई यात्रियों को भी स्टेशनों ने देखा है। भारतीय रेल भारतीय एकता का स्रोत है। इसने हर भारतीयको भाई-बहन समझने का अवसर दिया है। भाषा की अड़चन को दूर किया। सिखाया कि भाषा से बढ़कर है प्रेम भावना। भगवद् गीता के कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन को चरितार्थ करते हुए रेलपथ के आस-पास के बच्चे यात्रियों को हाथ हिलाकर अपनी खुशी जताते नजर आते हैं और बदले में वे कुछ भी अपेक्षा नहीं करते हैं। अगर कोई यात्री हाथ हिलाता है तो सोने में सुगंध होना जैसा है। यात्रा के दौरान भारतीय रेल अनायास ही जीवन पाठ सिखा देती है। पहाड़ हो या सुरंग अपनी गति में रेल चलती गई और यात्री आगे पहुँचते गए। भारत को एक सूत्र में पिरोने का काम असल में सर्वप्रथम रेलवे ने ही किया है।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान- देश का मान

वांची मणियाच्ची एक स्टेशन है। क्या आपको मालूम है उसका नाम क्यों ऐसा हुआ ? वांछिनाथ अय्यर नामक एक देशप्रेमी युवक था जिसने तिरुनेलवेली में कर वसूलने के नाम पर अत्याचार कर रहे ब्रिटिश सरकार के कर संग्राहक रॉबर्ट आशे को गोली से उड़ा दिया। रेलवे ने देश के वास्ते अपने जीवन को ही समर्पित करने वाले उस युवक के नाम से इस स्टेशन का सम्मान बढ़ाया है। जब भी उस स्टेशन के जरिए कोई गुजरता है तब अनायास ही उसके मन में देश और उस अमर जवान के प्रति श्रद्धा सुमन खिल उठते हैं। इसी प्रकार स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े देशभक्त जैसे **क्रांतिवीर सांगोल्ली रायन्ना** स्टेशन बंगलूरु में, **बेला मित्रा** के यादगार में बेलानगर रेलवे स्टेशन पश्चिम बंगाल में, **मइलारा महादेवप्पा** स्टेशन कर्नाटक में हैं। लाल, बाल, पाल हो या भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव हो या अहिंसा के पुजारी गांधी एवं उनके अनुयायी हो, इन सबका नाम सुनते ही हमें उनके बलिदान की याद आती है और हम नमन करने से नहीं चूकते और भारतीय रेल ने भी इन नेताओं के सम्मान में स्टेशनों का नामकरण कर उनके प्रति श्रद्धा की भावना को जागृत किया है।

भारतीय रेल के खिलाड़ी - देश की शान

टोक्यो ओलंपिक 2020 की महिला हॉकी टीम के 16 खिलाड़ियों में से सुश्री मोनिका मालिक, सुश्री वंदना कटारिया, सुश्री सुशीला चानु आदि 13 खिलाड़ी भारतीय रेल के हैं। जब विश्वस्तरीय कोई खेल प्रतियोगिता संपन्न होती है, नाम तक जिन देशों का सुना नहीं, पदक जीतते हैं और अपने देश का खराब प्रदर्शन रहता है तो हर भारतवासी के मन में प्रश्न उठता है कि क्या सौ करोड़ की आबादी वाले इस देश में स्वर्ण पदक, रजत पदक लेनेवाला कोई नहीं। रेलवे इस अपमान को सह नहीं पाती, क्योंकि देश सेवा में लगे इस संगठन का विचार यही है कि सभी दृष्टि से देश को आगे बढ़ाएं। एम.एस.धोनी को जब वह कुछ नहीं था तब रेलवे ने ही टिकट चेकर का पद देकर प्रोत्साहित किया था। उन्होंने आगे चलकर कई कीर्तिमान स्थापित किए, अब वह इतिहास है। उस इतिहास के प्रारंभिक पन्ने केवल भारतीय रेल के हैं। हर खेल में राष्ट्रीय स्तर पर खेलनेवाले खिलाड़ियों में से कुछ खिलाड़ी अवश्य भारतीय रेल में काम करते हैं। यह गर्व की बात भी है और इसमें समर्पण भाव भी है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पदक जीतनेवाले श्री भास्कर न, सुश्री पी.टी.उषा, सुश्री वलसम्मा जैसे खिलाड़ी अब भी रेलवे में काम कर रहे हैं, मार्गदर्शन दे रहे हैं। पुरुष हॉकी टीम के श्री अमित रोहिदास, श्री नीलकंठ शर्मा रेलवे के ही हैं। कभी न भूलना चाहिए कि भारतीय रेल भारत के हर क्षेत्र की नींव है और देश को मजबूत बनाने में अहम भूमिका निभाती है।

भारतीय रेल और साहित्य – देश का अभिमान

साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य समाज की कमियों को दर्शाता है, खूबियों की प्रशंसा करता है। भाषाएँ अनेक पर भाव एक है - साहित्य के लिए। तमिल कवि भारतियार हो या हिंदी के कवि निराला, दोनों के साहित्य में अधिक समानता है। भारतीय रेल देश की एकता को बनाए रखने के हर अवसर का उपयोग कर लेती है। गांधी जी के लिए एक हरिश्चंद्र नाटक काफी था। वैसे ही पाठक को संपूर्ण रूप से बदलने के लिए किसी भी लेखक या लेखिका के विचार रूपी एक चिंगारी काफी है। विचारों को जानना बाद में, पहले श्रेष्ठ साहित्यकारों का नाम तो सुने - इस उद्देश्य से भी कई स्टेशनों के लिए, गाड़ियों के लिए साहित्यकारों का नाम रखा गया है। अच्छा साहित्य, अच्छे समाज का गठन करता है और अच्छा समाज अच्छे देश का निर्माण करता है। भारतीय रेल का बुनियादी विचार श्रेष्ठ देश का निर्माण करना है। कैफियत सुपरफास्ट एक्सप्रेस का नाम सुप्रसिद्ध कवि स्वर्गीय कैफ़ी आज़मी से जुड़ा है, जो आजमगढ़ के थे। ताराशंकर बंधोपाध्याय के उपन्यास का नाम ही एक गाड़ी के लिए रखा गया है - गणदेवता एक्सप्रेस जो हावड़ा और अज़ीमगंज के बीच चलती है। मराठी कवि केशव दामले द्वारा रचित श्रेष्ठ कविता के समर्थन में गाड़ी का नाम तुतारी (राज्यरानी) एक्सप्रेस रखा गया। सुप्रसिद्ध कवि शैलेंद्र जी रेलवे में माटुंगा में काम करते थे। अपने बारे में स्वयं कहा है कि रेलवे कॉलोनी में बैठते ही अनगिनत कविताएँ लिखी हैं मैंने। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद की गौरव गाथा के रूप में गोदान एक्सप्रेस नाम रखा गया है। बलाई चंद मुखोपाध्याय द्वारा रचित उपन्यास हाटे बजारे के यादगार में हाटे बजारे एक्सप्रेस का नाम रखा गया है। विभूतिभूषण बंदोपाध्याय का सुप्रसिद्ध उपन्यास आरण्यक के नाम पर आरण्यक एक्सप्रेस का नामकरण किया गया है।

स्वतंत्रता के बाद भारतीय रेल का समर्पण भाव

देश का विकास आर्थिक विकास पर भी निर्भर करता है। आर्थिक दृष्टि से शुरू से ही रेल देश की सेवा में लगी है। सस्ते दाम पर उच्च सेवा उपलब्ध करती आ रही है। इसने देश को मजबूत करने के लिए यूनिगेज की संकल्पना की ताकि पूरे भारत में रेल गाड़ी का सुचारु संचालन हो। दुर्घटना को कम करने और स्तर बढ़ाने के उद्देश्य से एलएचबी कोच निर्मित किए जा रहे हैं। प्रदूषण रोकने के लिए पूर्ण विद्युतीकरण कार्य चल रहा है। आपके निवास स्थान से गंतव्य स्थान तक की कल्पना को स्थूल रूप दिया जा रहा है और अतिद্রुत गति से माल वहन की कोशिश की जा रही है। राज्य सड़क यातायात विभाग के साथ समझौता ज्ञापन करते हुए इसे कार्यान्वित किया जाना है। वन्दे भारत जैसे अतिद्रुत गाड़ियां भी चलने लगी हैं। इसमें मेक इन इंडिया का भी विश्वास है।

देश की सेवा करने के सैकड़ों तरीके हैं - दिल में केवल देश प्रेम होना चाहिए। हमेशा सोचिए कि मैं अपने देश के लिए क्या कर सकता हूँ। दुनिया में वही देश सबसे ज्यादा मजबूत होता है जिसके नागरिक अपने देश से सबसे ज्यादा प्यार करते हैं, देश का सम्मान करते हैं।

अब भी आगे भी ...

परिवर्तन ही अपरिवर्तनीय है। परिवर्तन को समझते हुए अपने को समय के अनुसार परिवर्तित करने में भारतीय रेल अगुआ बनी हुई है। तीसरी, चौथी लाइन बिछाना, माल गाड़ियों के लिए महत्व देना, उसके लिए अलग से समर्पित कॉरिडोर बनाना, सस्ते दाम में सरल तरीके से माल को कहीं से कहीं भी ले जाना आदि पर जोर दिया जा रहा है। भविष्य में समपार रहित रेलवे लाइन स्थापित करने, नवीनतम तकनीकी का उपयोग करते हुए लोको पायलट, गार्ड रहित गाड़ी चलाने का विचार भी है। शून्य दुर्घटना का लक्ष्य हासिल करने के लिए भारतीय रेल तत्पर है। बेहतरीन सेवा दिलाने के लिए सदा अपने को अद्यतन करती आ रही है। वास्तव में कहा जाए तो यह भारतीय रेल का विकास नहीं बल्कि देश का विकास है।

निष्कर्ष

भारतीय रेल महाकवि प्रसाद जी के निम्नलिखित पंक्तियों को सच बनाने का हर संभव प्रयास करेगी:-

अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।
बरसाती आँखों के बादल, बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकरातीं अनंत की, पाकर जहाँ किनारा।।
हेम कुम्भ ले उषा सवेरे, भरती दुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब, जगकर रजनी भर तारा।।

हिंदी शिक्षण योजना की परीक्षाएँ और नकद पुरस्कार

Examinations and Cash awards under Hindi Teaching Scheme

हिंदी भाषा प्रशिक्षण/Hindi Language Training :

अंक/Marks	प्रबोध/Prabodh	प्रवीण/Praveen	प्राज्ञ/Pragya
70 प्रतिशत और उससे अधिक 70 % and more	रु.1600/-	रु.1800/-	रु.2400/-
60 प्रतिशत या इससे अधिक पर 70 प्रतिशत से कम 60 % or more but less than 70%	रु.800/-	रु.1200/-	रु.1600/-
55 प्रतिशत या इससे अधिक पर 60 प्रतिशत से कम 55% or more but less than 60%	रु.400/-	रु.600/-	रु.800/-

केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी कामकाज राजभाषा हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु अभ्यास आधारित पाठ्यक्रम "पारंगत" के अधीन वित्तीय वर्ष 2021-22 से प्रस्तावित मानदेय पुरस्कार)

The proposed honorarium(award) from the financial year 2021-22 under the practice-based "Parangat" course to make the Central Government personnel proficient to carry out their official work in Hindi

	नकद पुरस्कार/Cash Award
70 प्रतिशत और उससे अधिक/70 % and more	रु.10,000/-
60 प्रतिशत या इससे अधिक पर 70 प्रतिशत से कम 60 % or more but less than 70%	रु.7000/-
55 प्रतिशत या इससे अधिक पर 60 प्रतिशत से कम 55% or more but less than 60%	रु.4000/-

(प्राधिकार: गृह मंत्रालय का 21 दिसंबर, 2020 का कार्यालय ज्ञापन सं-21034/69/2008-रा-भा.(प्रशि.) तथा रेलवे बोर्ड का 16.07.2021 का पत्र सं. हिंदी-2015/प्र.10/3 पार्ट)

Authority: MHA OM no.21034/69/2008-O.L.(Trg.) dt.21 December, 2020 and Railway Board
Lr. No. Hindi-2015/Pra.-10/3 Part dt.16.07.2021)

पंजाब

आर. इन्दुबाला

आशुलिपिक, ग्रेड -I, बिजली विभाग, मुख्यालय

भारत के उत्तर-पश्चिमी छोर पर स्थित यह राज्य देश के समृद्ध राज्यों में से एक है। इसे सभ्यता का पालना कहा जाता है। यहां कई जातीय और धार्मिक विविधताएं हैं और यहां कई धार्मिक आंदोलन भी हुए हैं। यह प्रांत हाल ही के कृषकों के आंदोलन में भी सक्रिय रहा। उपजाऊ मिट्टी और समृद्ध जल स्रोतों से भरपूर होने के कारण यह एक कृषि प्रधान राज्य है। देश की खाद्य सुरक्षा क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ऐतिहासिक रूप से आर्यों, फारसियों, ग्रीक, अफगानों और मंगोलों के संपर्क में आया है। पंजाब में पाँच नदियाँ- सतलुज, ब्यास, रावी, झेलम और चिनाब बहती हैं और इस राज्य को उपजाऊ बनाती हैं।

इसके पश्चिम में पाकिस्तानी पंजाब, उत्तर में जम्मू और कश्मीर, उत्तर-पूर्व में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में हरियाणा और संघ शासित प्रदेश चंडीगढ़ और दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान राज्य हैं। केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ पंजाब की राजधानी है जो हरियाणा राज्य की भी राजधानी है। पंजाब के प्रमुख नगरों में अमृतसर, लुधियाना, जालंधर, पटियाला और भटिंडा आदि शहर शामिल हैं।

भाषा: पंजाबी भारतीय भाषाओं में से एक है जो इंडो- आर्यन भाषाओं परिवार से जुड़ी है और भारत और पाकिस्तान दोनों देशों में बोली जाती है। यह हिंदी और उर्दू से मिलती- जुलती है। दुनिया की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में यह भी शामिल है। पंजाबी भाषा पंजाब की आधिकारिक भाषा है। यह दिल्ली की आधिकारिक भाषाओं में से एक है और हरियाणा की दूसरी भाषा है। पंजाबी, पाकिस्तान के सबसे बड़े प्रांत पंजाब की प्रांतीय भाषा भी है। पंजाबी भाषा को सौरसेनी प्राकृत भी कहा जाता है। मुस्लिम सूफी, सिख और हिंदू लेखकों ने पंजाबी में कई रचनाएं की हैं। इसकी लिपि गुरुमुखी है जिसे गुरु अंगद देव ने विकसित किया था।

इतिहास: प्राचीन समय में पंजाब भारत और ईरान का क्षेत्र रहा। मौर्य, बैक्ट्रियन, यूनानी, शक, कुषाण, गुप्त आदि अनेक राजवंशों ने यहां शासन किया था। पंजाब मध्यकाल में मुस्लिम शासकों के अधीन भी रहा। 15वीं और 16वीं शती में गुरु नानकदेव जी की शिक्षाओं से भक्ति आंदोलन ने जोर पकड़ा। सिख पंथ का मूल उद्देश्य सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों को दूर करना था। दसवें गुरु गोविंद सिंह ने सिखों को 'खालसा पंथ' के रूप में संगठित किया। मुगलों के अत्याचार के खिलाफ सिक्खों को एकत्र किया और 'पंजाबी राज' की स्थापना की। महाराजा रणजीत सिंह ने पंजाब को 'मदम कदा' अर्थात् स्वर्ग में बदल दिया था। उनकी मृत्यु के बाद अंग्रेजों की साजिशों के कारण यह साम्राज्य विनष्ट हो गया। 1849 में दो युद्धों के बाद पंजाब, ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन आ गया था। गांधी जी के स्वतंत्रता आन्दोलन से पहले ही ब्रिटिश शासन के खिलाफ पंजाब में संघर्ष प्रारम्भ हो गया था। स्वतंत्रता संग्राम में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में पंजाब के नागरिकों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। देश हो या विदेश, पंजाब बलिदान के लिए ख्यातिलब्ध है। इसे विभाजन का दर्दनाक कष्ट भी उठाना पड़ा। लेकिन यह राज्य संगठित रहा और सभी चुनौतियों का डटकर सामना किया।

पंजाब राज्य की खास बातें

भांगड़ा: भांगड़ा, नृत्य और संगीत का एक प्रकार है जिसकी उत्पत्ति पंजाब क्षेत्र से ही हुई। भांगड़ा डांस की शुरुआत लोक नृत्य के रूप में हुई थी जिसे पंजाबी किसान फसल के मौसम में करते थे। आज इंग्लैंड, कनाडा और अमेरिका में भी पंजाबी लोगों ने इस लोक नृत्य को प्रसिद्ध बनाया है।

भोजन: पंजाबी भोजन की भी अपनी खास विशेषता है। यहाँ के व्यंजनों में घी का खूब उपयोग किया जाता है। पंजाब के कुछ प्रसिद्ध व्यंजनों में मक्की दी रोटी , सरसों दा साग , शाही कबाब, तंदूरी चिकन, इत्यादि शामिल हैं।

उत्सव: इस क्षेत्र में कई उत्सव मनाए जाते हैं। कुछ प्रसिद्ध महोत्सव हैं- बंदी छोर दिवस (दिवाली), लोहड़ी, मेला माघी, होला मोहल्ला, राखी, बैसाखी, तीयान और बसंत।

पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री: यह राज्य, पंजाबी फिल्म इंडस्ट्री का घर है , इसे 'पॉलीवूड' भी कहा जाता है। यह भारत के तेजी से बढ़ रहे फिल्म उद्योगों में से एक है। 1936 में पहली पंजाबी फिल्म बनाई गयी। वर्ष 2000 से हर साल कई पंजाबी फिल्में रिलीज़ हो रही हैं जिनमें बॉलीवुड के कलाकार भी काम करते हैं।

पंजाब राज्य की महान हस्तियाँ:

शहीद भगत सिंह भारत के स्वतंत्रता संग्राम के युवा क्रांतिकारी भगत सिंह को कोई भी नहीं भूल सकता है। ऐसे कई वीरपूतों ने इस पावन भूमि पर जनम लिया था ।

मिलखा सिंह: 'फ्लाइंग सिख' के नाम से मशहूर भारतीय एथलीट मिलखा सिंह भी इसी राज्य के सपूत हैं जिन्होंने अपनी उपलब्धियों से इस राज्य का नाम रोशन किया है।

हरगोविंद खुराना: भारतीय वंश के जैव रसायन विज्ञानी हर गोविंद खुराना का जन्म भी तत्कालीन भारतीय राज्य पंजाब में हुआ था जिन्होंने चिकित्सा क्षेत्र में किए गए कार्य हेतु नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया था।

युवराज सिंह: भारतीय क्रिकेट टीम के बाएं हाथ के धुवांधार बल्लेबाज युवराज सिंह भी मूलतः पंजाब राज्य में जन्मे और पले बड़े हैं। हम सब जानते हैं कि इन्होंने अंतरराष्ट्रीय करियर में क्रिकेट के तीनों भी फॉर्मेट टेस्ट, एक दिवसीय तथा ट्वेंटी-ट्वेंटी में कमाल दिखाया है।

पंजाब के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल

अमृतसर: अमृतसर एक पावन शहर है जहां पर दिन की शुरुआत गुरुद्वारों के आध्यात्मिक प्रार्थना के साथ होती है। अमृतसर में मशहूर स्वर्ण मंदिर (Golden Temple) है जहां पर हर साल लगभग लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं। यह सिख धर्म का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक केंद्र है। यहां पर बैसाखी पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। भारतीय इतिहास की दुखद घटना जलियांवाला बाग हत्याकांड भी यहीं पर हुआ था। वाघा बॉर्डर जाना हो तो भी आपको यहीं जाना होता है।

चंडीगढ़: चंडीगढ़ भारत का एक केंद्र शासित प्रदेश है जो पंजाब के साथ हरियाणा की भी राजधानी है।

चंडीगढ़ को सपनों का शहर भी कहा जाता है। चंडीगढ़ का सबसे प्रमुख पर्यटन स्थल रोज गार्डन है , जो अतयंत मनोरम है। यहां पर लगभग 825 किस्म के फूल और 32500 प्रकार के पेड़ उपलब्ध हैं। इस गार्डन को जाकिर हुसैन गार्डन के नाम से भी जाना जाता है। यहां का रॉक गार्डन भी देखने लायक स्थान है।

जालंधर: इस खूबसूरत शहर में सेंट मैरी कथीड्रल, निक्कू पार्क, इनाम नासिर मस्जिद, पुष्पा गुजराल साइंस सिटी और माता शीतला मंदिर आदि देखने लायक स्थान हैं।

आनंदपुर साहिब : सिखों के प्रमुख धार्मिक स्थलों में एक आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा यहां का प्रमुख आकर्षण है। माना जाता है कि गुरु गोविंद सिंह ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा यहीं पर गुजारा था और इस पवित्र जगह पर उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना भी की थी।

लुधियाना: यदि आप पंजाब घूमने की योजना बना रहे हैं तो लुधियाना को अपनी लिस्ट में जरूर शामिल करें। यह पंजाब के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। सतलज नदी के किनारे स्थित यह शहर अपने मनोरम दृश्य से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

इन शहरों के अलावा पटियाला, भटिंडा, कपूरथला, पठानकोट आदि शहरों में भी कई पर्यटन स्थल हैं जो पर्यटकों को आकृष्ट करते हैं। अगर आप पंजाब जाने की योजना बना रहे हैं तो आप जरूर इन शहरों का लुफ्त उठाना न भूलें।

सावित्रीबाई फुले - भारत की पहली महिला शिक्षिका

जेब सेल्व शांति

वरिष्ठ आशुलिपिक, बिजली विभाग, मुख्यालय

परिचय

महाराष्ट्र के सतारा जिले के नयागांव में एक दलित परिवार में 3 जनवरी 1831 को जन्मी सावित्रीबाई फुले भारत की पहली महिला शिक्षिका थीं। इनके पिता का नाम खन्दोजी नैवेसे और माता का नाम लक्ष्मी था। सावित्रीबाई फुले शिक्षक होने के साथ-साथ भारत के नारी मुक्ति आंदोलन की पहली नेता, समाज सुधारक और मराठी कवयित्री भी थीं। बालिकाओं को शिक्षित करने के मामले में इन्हे समाज का कड़ा विरोध झेलना पड़ा था और कई बार इन्हें समाज के रूढ़िवादियों से पत्थर भी खाने पड़े।

आजादी के पहले तक भारत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति उतनी अच्छी नहीं थी। आज की तरह उन्हें शिक्षा का अधिकार नहीं था। 18वीं सदी में तो महिलाओं का स्कूल जाना भी पाप समझा जाता था। ऐसे समय में सावित्रीबाई फुले की उपलब्धि अतुलनीय है। वह जब स्कूल पढ़ने जाती थीं तो लोग उन पर पत्थर फेंकते थे। लेकिन इन्होंने इन सब का परवाह नहीं किया। वे अपने लक्ष्य से कभी नहीं भटकीं और आगे चलकर लड़कियों व महिलाओं को शिक्षा का अधिकार दिलाया। उन्हें आधुनिक मराठी काव्य का अग्रदूत माना जाता है।

इनके जीवन साथी भी इनके विचारों का आदर करते थे, क्यों न करेंगे, वे तो उस समय के महान समाज सुधारक ज्योतिबा फुले थे। सावित्रीबाई का विवाह बहुत ही छोटी उम्र में हो गया था। नौ साल की उम्र में वर्ष 1840 में ज्योतिराव फुले के साथ उनका विवाह हो गया। शादी के बाद वह जल्द ही अपने पति के साथ पुणे आ गईं। विवाह के समय वह पढ़ी-लिखी नहीं थीं। लेकिन पढ़ाई में उनका मन बहुत लगता था। उनके पढ़ने और सीखने की लगन से प्रभावित होकर उनके पति ने उन्हें प्रोत्साहित किया और उनकी शिक्षा को जारी रखने को कहा। सावित्रीबाई ने अहमदनगर और पुणे में शिक्षक बनने का प्रशिक्षण लिया और एक योग्य शिक्षिका बनीं। सावित्रीबाई ने अपने पति के साथ मिलकर 1848 में बालिकाओं के लिए एक विद्यालय की स्थापना की।

सावित्रीबाई फुले ने समाज द्वारा लड़कियों की शिक्षा के विरोध के बावजूद भी उन्हें शिक्षित करने का प्रण लिया था। उनकी कविताओं में 'अज्ञान', 'शिक्षा के लिए जाग्रत हो जाओ', 'श्रेष्ठ धन', 'अंग्रेजी मय्या', 'अंग्रेजी पढ़ो', 'समूह-संवाद की कविता' आदि कविताओं में स्त्री शिक्षा पर अधिक बल दिया गया है।

एक स्त्री होने के कारण वे समाज में स्त्री शिक्षा के विरोध के कारणों को जानती थीं। पहला कारण था सामाजिक रूढ़िवादी परिवेश। समाज की धारणा थी कि स्त्रियों को गुलाम बनाए रखें ताकि लड़कियाँ शिक्षा से चेतनाशील होकर महिला विरोधी कुप्रथाओं का विरोध न कर सकें। दूसरा कारण लड़कियों का अपना परिवार ही था। परिवार में माता-पिता के बाद बेटी ही घर के सभी कामों में सहयोगी होती है। उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह घर में अपने से छोटे सभी बच्चों की देखभाल करे। ऐसे में माता-पिता उसकी शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं मानते थे। उनकी इस सोच ने लड़कियों को घर की चहारदीवारियों में फंसा रखा था।

इस हालत में सावित्रीबाई फुले के समक्ष लड़कियों और उनके माता-पिता को शिक्षा के प्रति जागरूक बनाना एक चुनौतीपूर्ण काम था। उन्होंने इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार कर लिया और सभी महिलाओं को सखी के रूप में संबोधित करते हुए कहती थीं कि - स्वाभिमान से जीने के लिए पढ़ाई करो। नारियों का सच्चा आभूषण शिक्षा है। चलो, पाठशाला जाओ। पहला काम पढ़ाई, फिर वक्त मिले तो खेल-कूद। पढ़ाई से फुर्सत मिले तभी करो घर की साफ़-सफाई/चलो, अब पाठशाला जाओ। इस तरह सावित्रीबाई फुले ने महिलाओं की शिक्षा के लिए उनके बीच जाकर जागृति का अभियान चलाया था।

छात्राओं के लिए पहले स्कूल की स्थापना

बालिकाओं की पढ़ाई के लिए उन्होंने 3 जनवरी 1848 को पुणे में अपने पति के साथ मिलकर विभिन्न जातियों की नौ छात्राओं के साथ महिलाओं के लिए पहले स्कूल की स्थापना की। इसके बाद एक ही वर्ष में सावित्रीबाई और महात्मा फुले पांच नये विद्यालय खोलने में सफल रहे। तत्कालीन सरकार से इन्हें इसके लिए सम्मान भी प्राप्त हुआ। एक महिला प्रिंसिपल के लिए उस जमाने में बालिका विद्यालय चलाने का काम कितना कठिन हो सकता था, इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती है। लेकिन वे अपने संकल्प पर दृढ़ रहीं।

भारत में आजादी से पहले समाज के अंदर छुआछूत, सती प्रथा और बाल-विवाह जैसी कई कुरीतियाँ व्याप्त थीं। सावित्रीबाई फुले को जीवन में कई मुश्किलों का सामना करना पड़ा। दलित महिलाओं के उत्थान के लिए काम करने, छुआछूत के खिलाफ आवाज उठाने के कारण उन्हें एक बड़े वर्ग के द्वेष को भी भुगतना पड़ा। वह स्कूल जाती तो उनके विरोधी उनपर पत्थर मारते और उनपर गंदगी फेंकते थे। सावित्रीबाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर चलती थीं और स्कूल पहुंच कर मैली साड़ी को बदल लेती थीं। इस तरह वे सब के लिए तैयार थीं।

1890 में जब सावित्रीबाई के पति ज्योतिराव का निधन हो गया तब उन्होंने सभी सामाजिक मानदंडों को तोड़ते हुए अपने पति का अंतिम संस्कार और दहन संस्कार भी किया। करीब सात साल बाद जब 1897 में पूरे महाराष्ट्र में प्लेग की बीमारी फैली तो उन्होंने प्रभावित क्षेत्रों में लोगों की मदद की और इसी दौरान वे खुद भी प्लेग की शिकार हो गईं। 10 मार्च 1897 को उन्होंने अंतिम सांस ली।

आज महिलाएं हर क्षेत्र में आगे हैं और आगे बढ़कर समाज में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रही हैं। इन सब के पीछे उनका शिक्षित होना एक महत्वपूर्ण कारण रहा है। शिक्षा ने स्त्रियों को अधिकार दिलाया है और उन्हें सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान की है। इसके पीछे सावित्रीबाई फुले के योगदान को कोई भूल नहीं सकता। वे ऐसी शख्स रहीं जिन्होंने स्त्री शिक्षा के लिए जी तोड़कर मेहनत की। वह पहली महिला रहीं जो बालिकाओं की शिक्षा भी थीं और उनके विद्यालय की संस्थापक भी। समाज में ऐसे ही सुधारवादियों की सदैव आवश्यकता रहती है।

साइखोम मीराबाई चानू

मोहन, कनिष्ठ अनुवादक
डीजल लोको शेड, ईरोड

जोश, ज़ज्बा, जुनून और हौसला जिनके पास हो , जो परिस्थितियों का सामना करने से न डरे, जो संघर्ष को अपनी आदत बना ले, वह इस दुनिया में कुछ भी हासिल कर सकता है। ऐसा ही कुछ कर दिखाया महज 24 वर्षीय वेटलिफ्टर साइखोम मीराबाई चानू ने । मशहूर भारतीय वेटलिफ्टर मीराबाई चानू ने राष्ट्रमंडल खेल 2022 में स्वर्ण पदक जीत लिया है। मीराबाई चानू वेटलिफ्टिंग में कोई आम नाम नहीं हैं। इनकी लंबाई से इनकी काबिलियत को आंकने की भूल करना इनके प्रतिद्वंद्वियों को भारी पड़ता है। जब मीराबाई चानू मुकाबले में उतरती हैं तो भारत को अपना एक मेडल पक्का तो लगता ही है , भले ही वह किसी भी टूर्नामेंट का क्यों न हो। इतनी कम उम्र में इन्होंने वह पा लिया है जो अभी तक कई खिलाड़ियों के लिए एक सपना ही है।

मीराबाई चानू का जन्म 8 अगस्त 1994 को पिता साइकोहं कृति मैतेई एवं माँ साइकोहं ऊंगबी तोम्बी लीमा के यहाँ मणिपुर राज्य के इम्फाल शहर में हुआ था। मीराबाई चानू बचपन से भारी भरकम सामान उठाने में माहिर थी। अपना घर चलाने के लिए ये जंगलों से भारी भरकम लकड़ियों के ढेर लाया करती थीं। इनके पिता साइकोहं कृति मैतेई लोक निर्माण विभाग के कर्मचारी हैं और इनकी माँ घर का कामकाज सँभालने के अलावा एक दुकान भी चलाती हैं। मीरा छोटी उम्र में ही अपने भाई के साथ पहाड़ी क्षेत्रों से लकड़ियों के गट्टर लाने में मदद करती थी। 12 वर्ष की उम्र में यह लकड़ी के बड़े गट्टर उठाने में सक्षम थी। एक तरह से यह अनौपचारिक रूप से वेट लिफ्टिंग की प्राकृतिक माहौल में प्रशिक्षण ले रही थी।

बचपन से मीरा बाई चानू एक भारोत्तोलक खिलाड़ी न बनकर एक तीरंदाज बनना चाहती थी , लेकिन कक्षा आठ की एक किताब को पढ़कर इनकी सारी जिंदगी बदल गयी । दरअसल उस किताब में भारत की पूर्व भारोत्तोलक खिलाड़ी कुंजरानी देवी का जिक्र था, जो अब तक सबसे ज्यादा पदक जीतने का रिकार्ड रखती थी। उसके माता-पिता ने उसकी प्रतिभा को तब देखा जब वह महज 12 साल की आयु में आसानी से अपने घर में जलाऊ लकड़ी का भारी बोझ उठा सकती थी जिसे उठाने के लिए उसके भाई को भी संघर्ष करना पड़ता था।

एक सफल इन्सान की कहानी के पीछे बहुत सी विफलताओं की सीख और संघर्ष की दास्ताँ होती हैं। 49 किलोग्राम वर्ग में सिल्वर मेडल जीतने वाली मीराबाई का जीवन अभावों में शुरू हुआ और संघर्षों के बीच वह बड़ी हुई। मीराबाई चानू 2016 के रियो ओलम्पिक में 'डिड नॉट फिनिश' के साथ बाहर हो गई थी। एक बार भी ठीक तरह से वेट लिफ्ट न कर पाने के कारण उन्हें इतने बड़े टूर्नामेंट से बाहर होना पड़ा था। देशवासियों को चानू से बहुत उम्मीदें थीं। विफलता और लोगों का भरोसा पूरा न कर पाने की कसक के चलते चानू लम्बे समय तक डिप्रेशन में चली गई थी। लिफ्टिंग को छोड़ने का इरादा भी कर दिया। मगर लम्बे वक्त बाद चानू हार के उस गम से उभरी तो एक के बाद एक नई कहानी लिखने लगी। वेट लिफ्टिंग के सारे कारनामे कर डाले। जिस भी प्रतियोगिता में मीराबाई ने भाग लिया , न केवल मेडल जीता बल्कि एक नया कीर्तिमान भी स्थापित किया और वही चानू 5 साल बाद ओलम्पिक रजत पदक विजेता बनकर देश की आँखों का तारा बन गई। माननीय प्रधानमंत्री ने स्वयं उनसे फोन पर बात कर उन्हें बधाई दी थी।

चानू एक मध्यम वर्गीय परिवार से सम्बन्ध रखती हैं। इनके परिवार में माता पिता के अलावा दो बहिनें और एक भाई भी हैं। मीरा के कोच नमेइरक्पम कुंजरानी देवी हैं जो वर्ल्ड चैम्पियनशिप और एशियन गेम्स में भारत के लिए 9 मेडल जीत चुकी हैं। भारोत्तोलन की सबसे अधिक पदक जीतने वाली राष्ट्रीय महिला खिलाड़ी हैं। हर वक्त जब मीरा का साहस टूटा और अपने पथ से विचलित हुई हैं तो इन्होंने उसे मजबूत बनाकर लड़ने के लिए प्रेरित किया है।

चानू ने स्नातक तक की पढ़ाई की है तथा 48 किलोग्राम वर्ग में वेट लिफ्टिंग करती हैं। मीराबाई अभी तक अविवाहित हैं। उनका मानना है कि यदि वह विवाह करती है तो उसका करियर खत्म हो जाएगा। इस बात से आप अंदाजा लगा सकते हैं एक पेशेवर राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी के जीवन की अहमियत कितनी बड़ी होती है। उनके लिए व्यक्तिगत जीवन से अधिक करियर महत्वपूर्ण हो जाता है। जब मीरा 12 वर्ष की थी तभी जूनियर नेशनल गेम्स में भाग लेना शुरू कर दिया और अंडर 15 की विजेता बनी। 17 वर्ष की आयु में ये नेशनल जूनियर चैंपियन भी बनीं। वर्ष 2014 में ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में भारतीय भारोत्तोलक टीम का प्रतिनिधित्व किया और 48 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक जीता।

वर्ष 2016 मीराबाई चानू के जीवन का सबसे दर्दनाक वर्ष रहा। वह इस साल रियो में आयोजित ओलम्पिक के लिए क्वालीफाई तो कर पाई मगर एक भी मैच नहीं जीत पाई और बाहर हो गई। 2016 में दक्षिण एशियाई खेलों में स्वर्ण जीता। वर्ष 2017 के विश्व चैंपियनशिप में भी इन्होंने गोल्ड मेडल जीता। वर्ल्ड वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में पदक जीतने वाली पहली महिला खिलाड़ी बनी। राष्ट्रमंडल खेल 2018 में गोल्ड मेडल जीतने के बाद ये चोटिल हो गई। इसके बाद मीरा ने 2019 के थाईलैंड विश्व चैंपियनशिप में सबसे अधिक 200 किलो वेट उठाया।

अप्रैल 2021 में ताशकंद में हुए एशियन वेटलिफ्टिंग चैंपियनशिप में मीराबाई चानू ने 86 कि.ग्रा. वजन उठाने के बाद क्लीन एंड जर्क में वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाते हुए 119 कि.ग्रा. का वजन उठाकर कुल 205 कि.ग्रा. वेट लिफ्टिंग का नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। 24 जुलाई, 2021 को टोक्यो ओलम्पिक में रजत पदक जीतकर भारत का खाता खोला। अभी तक के इतिहास में कोई भी भारतीय महिला वेटलिफ्टर कुंजरानी के द्वारा जीते गए पदकों की बराबरी नहीं कर पायी है। बस, यहीं से जन्म हुआ मीराबाई चानू के भारोत्तोलक खिलाड़ी बनने का सफर।

इन्होंने 2014 के ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों में भारोत्तोलन स्पर्धा के 48 किलोग्राम वर्ग में रजत पदक प्राप्त किया। उन्होंने कुल 170 किलो वजन उठाया, जिसमें 75 स्लैच में और 95 क्लीन एण्ड जर्क में था। इन्होंने ब्राज़ील के रियो डी जेनेरो में आयोजित 2016 ग्रीष्मकालीन ओलम्पिक के लिए क्वालीफाई किया, किंतु क्लीन एण्ड जर्क में तीनों प्रयास असफल रहे और इस प्रकार पदक जीतने का अवसर भी गंवा दिया था। 2017 में उन्होंने महिला 48 कि.ग्रा. श्रेणी में 194 कि.ग्रा.(85 कि.ग्रा. स्लैच तथा 109 कि.ग्रा. क्लीन एण्ड जर्क) का भार उठाकर 2017 विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप, संयुक्त राज्य अमेरिका में स्वर्ण पदक जीता।

चानू ने 196 कि.ग्रा. जिसमें 86 कि.ग्रा. स्लैच में तथा 110 कि.ग्रा. क्लीन एण्ड जर्क में था, का वजन उठाकर 2018 के राष्ट्रमंडल खेल में भारत को पहला स्वर्ण पदक दिलाया। इसके साथ ही उन्होंने 48 कि.ग्रा. श्रेणी में राष्ट्रमंडल खेलों का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया। कर्णम मल्लेश्वरी के बाद चानू विश्व चैंपियन बनने वाली दूसरी भारतीय वेटलिफ्टर हैं। उन्होंने यह उपलब्धि नवंबर 2017 में हासिल की थी। तब उन्होंने 194 कि.ग्रा. (स्लैच में 85 कि.ग्रा. और क्लीन एंड जर्क में 109 कि.ग्रा.) वजन उठाया था। उस वक्त चानू की उम्र 22 साल थी। विश्व भारोत्तोलन चैंपियनशिप में भारत को स्वर्ण पदक जीतने में 22 साल लग गए। कर्णम मल्लेश्वरी ने 1994 और 1995 में इस प्रतियोगिता में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता था। विश्व भारोत्तोलन खेल में भारत को अभी दो ही स्वर्ण पदक प्राप्त हुए हैं।

भारोत्तोलन के क्षेत्र में साइखोम मीराबाई चानू की उपलब्धियों की सराहना करते हुए भारत सरकार ने “पद्म श्री” से इन्हें सम्मानित किया। साथ-साथ इन्हें राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार से भी नवाजा गया। वाकई इन्होंने भारत का नाम विश्व भर में रोशन कर दिया है।



भारत की भाषाएं

पी. मधु,

मुख्य कार्यालय अधीक्षक, बिजली विभाग, मुख्यालय

भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को भारत की आधिकारिक भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई है। आम धारणा यह होती है कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है लेकिन हिंदी को भारत की राजभाषा की हैसियत से ही संतुष्ट रहना पड़ा।

आजादी के बाद से इस मुद्दे पर कई बार चर्चा हो चुकी है। वैसे अष्टम अनुसूची की 22 भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाएँ मान सकते हैं- असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू।

भारत की विविधता ही इसकी 'विविधता में एकता' है। विभिन्न भाषाएं, संस्कृति, रीति-रिवाज आदि इसकी विशेषताएं हैं। भाषाओं और बोलियों की भरमार है यहां पर। एक जनगणना के अनुसार भारत में 30 से अधिक भाषाएँ और एक हज़ार से अधिक बोलियाँ बोली जाती हैं। 22 भाषाओं में से किसी एक को राष्ट्रीय भाषा के रूप में चुनने से उस भाषा को तो बढ़ावा मिलेगा लेकिन अन्य भाषाओं की हालत क्या होगी। भाषाएं न केवल संचार के बल्कि हमारे वास्तविक इतिहास और संस्कृति को समझने का भी माध्यम हैं। ऐसे में किसी एक भाषा का अंत हो जाता है तो उससे संबद्ध पूरी संस्कृति का ही अंत हो जाता है। ठीक यही हुआ पाली भाषा के साथ। संस्कृत दरबार की भाषा थी जबकि पाली आम भाषा थी। पाली के अंत के साथ हमने अपने इतिहास का एक बड़ा हिस्सा ही खो दिया है।

हिंदी राष्ट्रभाषा बन जाती है तो प्रशासन में सुधार होगा और सरकारी योजनाओं का तत्काल कार्यान्वयन होगा। लेकिन इसकी सीमाएं होती हैं, क्योंकि यह उन लोगों तक ही सीमित होगी जो हिंदी जानते हैं। हिंदी नहीं जाननेवालों के लिए भाषागत बाधा उत्पन्न होगी और यह संविधान के मुख्य ध्येय – 'सभी के लिए समान अवसर' को नष्ट कर देगा। यदि हिंदी राष्ट्रीय भाषा बन जाती है तो अन्य भाषा-भाषी लोग इसे सीखने की कोशिश करेंगे और साथ ही अंग्रेजी को जानने की आवश्यकता कम होगी। लेकिन इससे अंतर्राष्ट्रीय बाजार में हमारी समृद्धि कम हो सकती है।

मैं रेलवे में काम कर रहा हूँ। उच्चतर माध्यमिक स्तर तक मेरे पास तीन अलग-अलग पेपर के रूप में भौतिकी, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान था, जो मेरे वर्तमान काम के लिए किसी भी तरह उपयोगी साबित नहीं हो रहे हैं। इससे बेहतर होता अगर मुझे कई भाषाएं सीखने का मौका दिया गया होता। लेकिन एनईपी 2020 प्राथमिक छात्रों को 3 भाषाओं को चुनने का विकल्प प्रदान करती है। जब इतनी कम उम्र में भाषाएं सीखने के मौका मिलते हैं तो यह बच्चे में बहुभाषी व्यक्ति बनने के लिए रुचि पैदा करेगा। भारत कई भाषाओं और बोलियों की जननी है। सरकार का कर्तव्य पुल बनाना है दीवार नहीं। कि किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा घोषित करने से विभिन्न भाषाओं के लोगों के बीच का बंधन चकनाचूर हो जाएगा। लेकिन यदि भारत के हर स्कूल में एनईपी 2020 का पालन किया जाता है तो भाषा की बाधाएं अपने आप दूर हो जाएंगी और भारत सही मायने में एक मजबूत राष्ट्र बनेगा।

दंगा (कविता)

अश्विनी कुमार

कनिष्ठ आशुलिपिक, हिन्दी अनुभाग, मुख्यालय

जिधर भी नज़रें उठाकर देखता हूं उधर ही दंगा हो रहा है,
जिस्म पर कपड़े डालकर इंसान सोच से नंगा हो रहा है।
पाखण्ड तो इनका ऐसा गले मिलते हैं बड़े शौक्र से एक-दूजे से,
पर मन-ही-मन में एक-दूजे के लिए बेहिसाबी पंगा हो रहा है।
जिधर भी नज़रें उठाकर देखता हूं, उधर ही दंगा हो रहा है।

नश्वर-शरीर को पाक-साफ रखने के लिए घिस-घिस कर नहाते हैं,
पराई औरत तो छोड़ो मासूम बच्ची को भी वहशी नज़रो से रोंद,
ये नियत-जेहनियत से गंदा हो रहा है।
आज देवी समान औरत का बाज़ार में धंधा हो रहा है,
आंखें होने पर भी यह समाज अंधा हो रहा है,
जिधर भी नज़रें उठाकर देखता हूं, उधर ही दंगा हो रहा है।

जुर्म है, पर जबरन मांग करने पर दहेज़ दिया जा रहा है,
इस चक्कर में हर बेटी का बाप ऊपर से नीचे तक निचुड़ा जा रहा है,
ये जानते हुए भी हर लड़के का बाप क्या अंधा हो रहा है?
जिधर भी नज़रें उठा कर देखता हूं, उधर ही दंगा हो रहा है।

जाति, धर्म, मजहब के नाम पर ये लोग इंसानियत को बाँट लेते हैं,
ज़हरीले सांपों की क्या ज़रूरत इन्हें ये आपस में ही एक-दूजे को काट लेते हैं।
दूसरों की गलती होने पर ये जज बन डांट लेते हैं,
और खुद गुनाह करने पर, खुद ही मुंह बना रास्ता नाप लेते हैं।
जिधर भी नज़रें उठा कर देखता हूं, उधर ही दंगा हो रहा है।

सोशल मीडिया का मानव व्यवहार और समाज पर प्रभाव

बी. नवीना,

कार्यालय अधीक्षक, बिजली विभाग, मुख्यालय

सोशल मीडिया और सोशल नेटवर्क के बीच अंतर:

अक्सर लोगों में यह भ्रम रहता है कि सोशल मीडिया और सोशल नेटवर्क एक ही हैं और वे इन शब्दों का परस्पर इस्तेमाल करते हैं। वास्तव में इन दोनों में अंतर है यद्यपि ये दोनों एकदम एक दूसरे से भिन्न नहीं हैं।

सोशल नेटवर्क लोगों को जोड़ता है। उदाहरण के लिए, फेसबुक समान रुचि के लोगों को एक साथ लाता है तो उनका एक नेटवर्क बन जाता है जबकि सोशल मीडिया का उपयोग कंटेंट को आपस में बांटने हेतु किया जाता है। उदाहरण के लिए, यूट्यूब सोशल मीडिया है क्योंकि यूट्यूब के माध्यम से लोग जानकारी और विचार शेयर करते हैं। ब्लॉग सोशल मीडिया भी है और सोशल नेटवर्क भी। सच पूछें तो उपयोगकर्ताओं के साथ जुड़ने में इतना सक्षम माध्यम और कुछ नहीं है।

जैसा कि पहले ही कहा गया है सोशल मीडिया और सोशल नेटवर्क एक दूसरे से एकदम भिन्न नहीं हैं। देखा जाए तो सोशल नेटवर्क के माध्यम से सोशल मीडिया का विकास होता है। ये दोनों एक दूसरे के पूरक का काम करते हैं, ऐसा कहना भी बेहतर होगा।

मानव व्यवहार और समाज पर सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव:

सोशल मीडिया के कई लाभ हैं। हमेशा विकास हमें प्रगति के रास्ते पर ले जाता है। सोशल मीडिया के कारण वसुधैव कुटुंबकम की कल्पना संभव हो पाई है। इसने विभिन्न संस्कृतियों और विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ा है और विभिन्न विचारों का प्रचार-प्रसार किया है। इसके कारण लोगों के विचार करने के तरीके में अच्छे बदलाव आए हैं। सोशल मीडिया से लोग अपने पसंदीदा करियर को आगे बढ़ा सकते हैं, खुद की देखभाल कर सकते हैं और नए कौशल सीखने की अपनी इच्छा को पूरा कर सकते हैं। इनके कारण मानव व्यवहार में कई अच्छे प्रभाव आए हैं। इसकी वजह से समाज के ऐसे वर्ग के लोग भी आज अपने अधिकारों के लिए आवाज देने लगे हैं जिन्हें आवाज उठाने का कोई अधिकार नहीं था तो समझ लीजिए इसकी शक्ति को। पहले तो इनका सुननेवाला नहीं था जबकि सोशल मीडिया के कारण इन सबको बोलने का मौका मिल गया है। इस प्रकार देखा जाए तो सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अपने ज्ञान का विस्तार कर रहे हैं।

मानव व्यवहार और समाज पर सोशल मीडिया का नकारात्मक प्रभाव:

जैसा कि कहा जाता है न हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। कभी-कभी विकास ही विध्वंस का भी कारण बन जाता है। सोशल मीडिया भी इससे मुक्त नहीं है। इसके जितने अच्छे परिणाम हैं, ठीक उतने ही दुष्परिणाम भी हैं। सोशल मीडिया के कारण लोग दूसरों पर ध्यान नहीं देते और एक मिथ्या जगत में जीने की इच्छा कर रहे हैं। सोशल मीडिया के कारण लोग भड़काए जाते हैं कुमार्ग पर। लोग अपनी पहचान छुपाकर दूसरों को परेशान करते हैं। लोग, खासकर किशोर साइबर अपराधों के शिकार हो जाते हैं जिसके कारण उनका जीवन ही बरबाद हो जाता है। कभी-कभार तो लोग दूसरों को देखकर अपने को नीचा महसूस करते हैं और आत्म-ग्लानि का शिकार बन जाते हैं। अफवाहें आग की तरह फैलती हैं तो समुदायों के बीच का

सौहार्द विनष्ट हो जाता है। असामाजिक तत्वों के कारण युवा पीढ़ी को गुमराह किया जाता है और उन्हें भड़काया जाता है।

निष्कर्ष:

इस प्रकार देखा जाए तो सोशल मीडिया के कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं, सकारात्मक प्रभाव भी। कुल मिलाकर देखा जाए तो इसे समाज के लिए वरदान माना जा सकता है। हालाँकि सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव हैं लेकिन साइबर सुरक्षा सेल और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे माध्यमों का उपयोग करते हुए इन समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है। इसके सदुपयोग पर जागरूकता उत्पन्न करने हेतु कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं और लोगों को सोशल मीडिया के अच्छे और बुरे पक्षों के बारे में जानकारी उपलब्ध करा सकते हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण

मनु शिवशंकर,
वरिष्ठ इंजीनियर, बिजली विभाग, मुख्यालय

प्लास्टिक प्रदूषण क्या है:

प्लास्टिक प्रदूषण पृथ्वी पर प्लास्टिक का जमा होना है। प्लास्टिक गैर-बायोडिग्रेडेबल है। इसके पूरी तरह से नष्ट होने में लगभग 500 से 1000 साल लगते हैं। इससे पर्यावरण और सभी जीव प्रभावित होते हैं।

स्थिति की तीव्रता:

आजकल स्थिति इतनी गंभीर हो गई है कि हम सांस ले रहे हैं तो हम प्लास्टिक के कणों को अंदर ले रहे हैं और उन पौधों को खा रहे हैं जो जमीन से प्लास्टिक को अवशोषित करते हैं क्योंकि प्लास्टिक कचरे छोटे-छोटे कणों में विभाजित हो रहे हैं और हवा में घुलमिल गए हैं।

प्लास्टिक प्रदूषण के कारण:

इसके कई कारण हैं। आजकल प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग कई गुना बढ़ गया है और इसलिए प्लास्टिक का उत्पादन भी तेजी से बढ़ा है। प्लास्टिक बैग और अन्य प्लास्टिक उत्पादों का और कोई सस्ता विकल्प भी नहीं है। प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के बारे में जनता में या तो उचित जागरूकता नहीं है नहीं तो लापरवाह हैं। प्लास्टिक की थैलियों के उपयोग पर प्रतिबंध तो लगा है लेकिन कितने लोग इसका कड़ाई से अनुपालन कर रहे हैं। निर्माताओं पर प्लास्टिक को विनष्ट करने संबंधी कोई जिम्मेदारी नहीं होती है और इसलिए वे भी इसपर ध्यान नहीं देते। प्रयुक्त प्लास्टिक के कम प्रतिशत का ही पुनःश्रवण (रिसाइकिल) किया जा रहा है। रिसाइकिल करने योग्य प्लास्टिक की वस्तुओं को भी कचरे में फेंक दिया जाता है। सिंगल यूज प्लास्टिक आइटम ही प्लास्टिक प्रदूषण का मुख्य कारण है। उसपर कोई खास ध्यान नहीं दिया जाता है। चेन्नै के पेरुंगुडी में पड़े प्लास्टिक कचरे की पहाड़ियों को देखने पर हृदय कांपने लगता है।

प्लास्टिक प्रदूषण के प्रभाव:

प्लास्टिक कचरा भूमि, वायु और जल को प्रदूषित कर रहा है। जब प्लास्टिक को अन्य कचरे के साथ जलाया जाता है, तो यह जहरीले रसायनों को हवा में छोड़ता है जो स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का कारण बन जाता है। अधिकांश प्लास्टिक कचरा समुद्रों में मिल रहा है जिससे समुद्री जीवन भी बरबाद हो रहे हैं। समुद्र के बहुत सारे जानवर पानी के बोतलों को ऐसे ही निगल लेते हैं तो वे पेट में ऐसे ही रह जाते हैं। जब हम इन समुद्री मछलियों को खाते हैं तो हम भी परोक्ष रूप से पीड़ित हो जाते हैं। पौधे छोटे प्लास्टिक कणों

को अवशोषित करते हैं और जब हम इनका सेवन करते हैं तो हम भी प्रभावित हो जाते हैं। प्लास्टिक कचरे के कारण बारिश का पानी भी जमीन में नहीं जा पा रहा है। आजकल तो खाने की चीजें प्लास्टिक कवरों में दी जाती हैं। गर्मी के संपर्क में लाने पर बीपीए यथा बिस्फेनॉल-ए जैसे खतरनाक रसायन भोजन में मिल जाते हैं। प्लास्टिक कचरे में पॉलीविनाइल क्लोराइड और पॉली कार्बोनेट मौजूद होते हैं जो त्वचा रोग, कैंसर आदि के कारण बनते हैं।

भारत में उठाए गए कदम:

भारत में अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरीके से प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है। मुंबई, देश का सबसे बड़ा प्लास्टिक उपयोग करने वाला राज्य है। उसने सिंगल यूज प्लास्टिक की बिक्री, आयात और उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। तमिलनाडु में भी हाल ही में एक बार उपयोग वाले प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। भारत के कई अन्य राज्यों में भी सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाया गया है। लगभग सभी राज्यों ने प्लास्टिक कवर के लिए पैसा लेना शुरू कर दिया है। लेकिन ये सब कदम काफी नहीं हैं और इसमें और भी सख्ती बरती जानी है। भारत के अन्य सभी राज्यों की तुलना में सिक्किम में इस दिशा में सकारात्मक कार्य किया जा रहा है।

दुनिया भर की स्थिति

रवांडा ने 2008 से प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगा दिया है और संभावना है कि यह दुनिया का पहला प्लास्टिक मुक्त देश बने। रवांडा में प्लास्टिक प्रतिबंध अधिक प्रभावी है क्योंकि वहां पर प्लास्टिक बेचने और उपयोग करने की सजा गंभीर है। प्लास्टिक का उपयोग करने पर लोगों पर जुर्माना लगाया जाता है और उन्हें जेल भी भेजा जाता है। भारत, इंग्लैंड, चीन, ऑस्ट्रेलिया आदि जैसे लगभग 40 देशों में प्लास्टिक पर आंशिक प्रतिबंध है। प्लास्टिक सहित लगभग हर चीज को प्रभावी ढंग से रिसाइकिल करने में स्वीडन सबसे अच्छा देश है। आयरलैंड में प्लास्टिक की थैलियों को बहुत महंगा बनाया गया है।

क्या करना है:

प्लास्टिक बैग और कवर के विकल्प को प्रोत्साहित करने हेतु सब्सिडी दी जा सकती है। प्लास्टिक के दुष्परिणामों पर जागरूकता कार्यक्रम बड़े पैमाने पर आयोजित किए जा सकते हैं। प्लास्टिक कचरे से सड़कों और घरों आदि का निर्माण किया जा सकता है। निर्माताओं को कचरा निपटान के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सकता है। सभी स्तरों पर जितना हो सके हमें प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए। उदाहरण के लिए कपड़े के थैलों का इस्तेमाल किया जा सकता है। हाल ही में तमिलनाडु सरकार ने भी 'मीडुम मंज पै' योजना लागू की है जिसमें पुराने जमाने की तरह कपड़े से बनी पीले रंग की थैलियों के उपयोग पर जोर दिया जाता है। प्लास्टिक बोतल के स्थान पर स्टील बोतलों का उपयोग किया जा सकता है। प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने और अपनी पृथ्वी की मदद करने के लिए हम सभी को कंधे से कंधा मिलाकर काम करना चाहिए।



आयुष्मान भारत योजना –स्वस्थ भारत की स्वस्थ पहल

रूपा मंडल,
कनिष्ठ अनुवादक, सेलम मंडल

पुराने समय में अगर किसी गरीब परिवार में कोई बीमार हो जाता था तो वह अपना घर बेचकर इलाज करवाने पर मजबूर हो जाता था। लेकिन अब आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से कोई भी गरीब अपना इलाज करवा सकता है और अपने परिवार को स्वस्थ रख सकता है। जिंदगी जीने के लिए शरीर का स्वस्थ होना आवश्यक है और जब तक हमारा शरीर स्वस्थ नहीं रहेगा तब तक हम अपने परिवार की जिम्मेदारी सही प्रकार से संभालने में असमर्थ होंगे। बीमारी से बचाव के लिए समय - समय पर सरकार द्वारा कई योजनाएं बनाई गईं, लेकिन समाज में एक तबका ऐसा भी है जिनको ये सुविधाएं मिली ही नहीं क्योंकि ये आर्थिक रूप से काफी कमजोर वर्ग के हैं। बीमा करवाना हो तो भी लोगों को अपनी आय से कुछ न कुछ चुकाना होता है। रोज खाने कमाने वाले दिहाड़ी मजदूर और गरीबी रेखा से निचले तबके के लोग इसका लाभ न उठा पाते थे और बीमारी से अपनी जान गंवा बैठते थे। इस समस्या को देखते हुए हमारे देश की सरकार ने आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की जो वास्तव में देश के गरीब लोगों के लिए हेल्थ इन्श्योरेंस स्कीम है। इस योजना में शामिल होने वाले भारतीयों का मुफ्त में इलाज किया जाता है।

आयुष्मान भारत योजना हमारे देश की एक महत्वपूर्ण योजना है जो गरीब परिवार को स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने में मदद करती है। इस योजना की मदद से गरीब परिवार का कोई सदस्य अगर बीमार होता है तो केंद्र सरकार के द्वारा उस परिवार को एक लाख से पांच लाख तक मदद दी जाती है। दवाई और जांच फ्री की जाती है जिससे गरीब परिवार भी अपना इलाज करवा सकता है और वह बीमारी से मुक्त हो सकता है। इस प्रकार, सरकार ने प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (PM-JAY) जिसे आयुष्मान भारत के नाम से भी जाना जाता है, शुरू करके एक पथप्रदर्शक पहल की है। इसे ग्रामीण गतिविधियों और ग्रामीण स्वास्थ्य प्रणाली दोनों के बीच वित्तीय सुरक्षा बनाए रखने और कम स्वास्थ्य बीमा कवरेज पर उच्च व्यय के मुद्दों की देखभाल के लिए शुरू किया गया है। पीएम- जेएवाई ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में भारतीय समाज में गरीब और कमजोर समूहों पर वित्तीय बोझ को कम करता है।

भारत में गरीब और वंचित परिवारों को हेल्थकेयर और स्वास्थ्य संबंधी सुविधा प्रदान करने के लिए 23 सितंबर, 2018 को प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की पहल की गई थी। यह सरकार द्वारा शुरू की गई स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं की श्रृंखला में विकास संबंधी एक नवीनतम योजना है, लेकिन पहले की योजनाओं से काफी अलग। आयुष्मान भारत योजना को हमारे भारत के तत्कालीन वित्त मंत्री श्री अरुण जेटली द्वारा लाई गई योजना भी कह सकते हैं। इसकी सिफारिश नीति आयोग द्वारा की गई थी जिसको अरुण जेटली 1 फरवरी, 2018 के आम बजट में लेकर आए और पूरे देश में इस योजना को लागू किया गया और कई हेल्थ सेंटर भी खोले गए। इस योजना का लाभ हर गरीब को मिलता है। इस योजना का सिर्फ एक ही लक्ष्य है कि हमारे भारत में कोई भी परिवार बीमारी के कारण बर्बाद न हो और वह अपनी जिंदगी आनंद से जिए। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह योजना हमारे देश की सबसे बड़ी योजना है और इस योजना का लाभ गरीब परिवारों को मिल रहा है।

भारत में हेल्थकेयर सबसे बड़े राजस्व और रोजगार सृजन करने वाले क्षेत्रों में से एक बन गया है। बड़ी आबादी, बेहतर आय, बेहतर बुनियादी ढांचे, अच्छे स्वास्थ्य, स्वास्थ्य बीमा पॉलिसियों के लाभों के बारे में जागरूकता और भारत को एक चिकित्सा पर्यटन स्थल के रूप में लोकप्रिय बनाने वाले चिकित्सा पेशे जैसे कारक इसके कारण हैं। हालांकि, भारत का स्वास्थ्य सेवा खर्च दुनिया में सबसे कम प्रति व्यक्ति खर्च में से एक रहा है। कारण यह है कि अधिकांश भारतीयों के पास स्वास्थ्य बीमा इन्श्योरेंस नहीं है। इसके

अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य देखभाल कवर बहुत खराब है क्योंकि अधिकांश कुशल स्वास्थ्य देखभाल पेशेवर शहरी क्षेत्रों में काम कर रहे हैं। इस योजना को दो वर्गों में बांटा गया है - प्रथम वर्ग में 10 करोड़ लोगों को 5,00,000 रुपये प्रति वर्ष की सहायता दी जाती है। बाद में बचे हुए लोगों को भी इस योजना के तहत जोड़ने का प्रावधान है जिससे हमारे देश के किसी भी परिवार में बीमारी के कारण मृत्यु न हो। दूसरे वर्ग में स्वास्थ्य एवं कल्याण केंद्र आता है जिसके तहत पूरे देश में केंद्र और राज्य सरकार ने मिलकर डेढ़ लाख हेल्थ केयर सेंटर खोले हैं और लोगों को इसका लाभ मिल रहा है। दवाइयों के साथ - साथ चेकअप की भी सुविधा दी जा रही है। गांवों में भी हेल्थ केयर सेंटर खोले गए हैं और उनको इस योजना का लाभ मिल रहा है।

इस योजना का लाभ लेने के लिए हम स्वास्थ्य केंद्र पर जाकर पंजीयन कर सकते हैं। सभी स्वास्थ्य केंद्रों पर आयुष्मान योजना के तहत कार्ड बनाए जा रहे हैं। वहां जाकर हम पंजीयन करा सकते हैं। इस योजना का लाभ उस परिवार को दिया जा रहा है जिस परिवार के पास गरीबी रेखा का पॉस हो और उसका परिवार आर्थिक रूप से कमजोर हो। इस योजना के माध्यम से हम किसी बड़ी बीमारी का इलाज भी करवा सकते हैं। इस योजना की सबसे बड़ी खासियत यह है कि हम सरकारी अस्पताल के साथ-साथ कुछ प्राइवेट अस्पतालों में भी इलाज करा सकते हैं। यह योजना अस्पताल में भर्ती और संबंधित खर्चों को पूरा करती है जिसमें अधिकांश माध्यमिक और तृतीयक देखभाल प्रक्रियाओं के साथ-साथ अस्पताल में भर्ती होने से पहले और अस्पताल में भर्ती के बाद के खर्च शामिल हैं, जिसकी सीमा प्रति वर्ष प्रति परिवार 25 लाख रुपये है। नवीनतम सामाजिक-आर्थिक जाति जनगणना (SECC), 2011 में जिन नागरिकों का नाम शामिल है, वह आयुष्मान भारत योजना का लाभ उठा सकते हैं। (SECC), 2011 के अनुसार पहचान किए गए 10 करोड़ से अधिक गरीब, वंचित ग्रामीण परिवारों और शहरी श्रमिक परिवारों के वंचित व्यावसायिक श्रेणियों के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान की जाती है। इस योजना में सर्जरी, चिकित्सा और दवा, निदान और परिवहन सहित दैनिक देखभाल उपचार आदि सभी शामिल हैं। इस योजना में पहले से मौजूद बीमारियां भी शामिल हैं। सरकारी अस्पताल के साथ-साथ निजी अस्पतालों में भी इस योजना के तहत मुफ्त इलाज किया जा रहा है क्योंकि सरकारी और निजी अस्पतालों में एक लाख से अधिक प्रधान मंत्री आरोग्य मित्र नियुक्त किए गए हैं जिनका काम इलाज के लिए आने वाले लोगों को सुविधा दिलाने में मदद करनी है। इस प्रकार ये अस्पताल उनके उपचार करने से इनकार नहीं कर सकते।

यह सुनिश्चित करने के लिए कि परिवार के सभी सदस्य, विशेष रूप से बालिकाएं, महिलाएं और बुजुर्ग शामिल हैं, परिवार के सदस्यों की संख्या की कोई सीमा नहीं रखी गई है। हालांकि, पहचाने गए प्रत्येक परिवार को एक आयुष्मान परिवार कार्ड जारी किया गया है जिसमें परिवार के मुखिया का नाम, परिवार के अन्य सदस्यों का विवरण, संपर्क जानकारी आदि शामिल हैं। यह पूरी तरह से सॉफ्टवेयर संचालित है और पूरे भारत में इसका नेटवर्क है। इस प्रकार, एक लाभार्थी परिवार के सदस्य यदि आवश्यक हो तो एक ही राज्य के भीतर विभिन्न स्थानों पर दी गई सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं। यह एक ऐसी योजना है जिसका लाभ कचरा उठाने वाले से लेकर सड़क पर भीख मांगने वाले तक को मिल रहा है।

आयुष्मान भारत में पहले की स्वास्थ्य योजनाओं से भी अधिक फायदे हैं। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना (आरएसबीवाई) की कथित कमियों को इसमें ठीक कर दिया गया है। आरएसबीवाई योजना ने केवल माध्यमिक और तृतीयक अस्पताल में भर्ती के लिए प्रति परिवार प्रति वर्ष 30000 स्वास्थ्य बीमा कवरेज को मंजूरी दी। आयुष्मान भारत योजना एक सकारात्मक कदम है, जिसमें प्रति परिवार 5 लाख की वृद्धि की कवरेज सीमा है। इसके अलावा, पीएम-जेएवाई सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी)

और सतत विकास लक्ष्य-3 (एसडीजी 3) की उपलब्धि की दिशा में भारत की प्रगति को तेज करना चाहता है जिसके लिए आशा है कि भारत सरकार भी सहमति देगी।

इस प्रकार, PM-JAY विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य योजनाओं के माध्यम से सेवा वितरण के दृष्टिकोण से एक प्रतिमान है। यह एक बड़ा, अधिक व्यापक, बेहतर रूपांतरित और द्वितीयक और तृतीयक देखभाल आधारित सेवा वितरण प्रणाली है। इसके शुरू होने के चार महीने के भीतर एक लाख से अधिक परिवार इससे लाभान्वित हो चुके हैं। पीएम-जेएवाई के पीछे सरकार की दृढ़ वित्तीय प्रतिबद्धता और देश में स्वास्थ्य सेवा में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। जल्द ही ये हेल्थकेयर सेंटर न्यू इंडिया का चेहरा बनने वाले हैं। भारत ने महामारी के दौरान 50,000 आयुष्मान भारत केंद्रों को चालू किया। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने घोषणा की है कि दिसंबर 2022 तक 1.5 लाख आयुष्मान भारत-स्वास्थ्य और कल्याण केंद्र स्थापित किए जाने थे। कोरोना महामारी से उत्पन्न चुनौतियों के बीच देश भर में 50,025 आयुष्मान भारत-स्वास्थ्य और कल्याण केंद्रों (AB-HWCs) से अधिक काम करने लगे हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि यह एक महत्वाकांक्षी योजना है जो भारत की आर्थिक रूप से गरीब वर्ग के 40 फीसदी आबादी के जीवन को लाभान्वित कर रही है। आने वाले समय में यह भारत को सतत विकास लक्ष्यों तक पहुँचाएगी। लेकिन यह पूरी तरह से कहां तक सफल होगी यह कहना बहुत ही मुश्किल है। कहीं अन्य योजनाओं की तरह यह भी बस कागजों तक ही सीमित होकर न रह जाए, क्योंकि कोई भी योजना जो लोगों के लिए लाभदायक होती है वह भ्रष्ट हुए बिना नहीं रह सकती है। लोग हर एक चीज में फायदा उठाने की बात सोचने लगते हैं। इस योजना का लाभ लेने वालों को सरकारी अस्पतालों के बजाय निजी अस्पताल में इलाज करवाना अच्छा लग रहा है जिससे सरकार को अधिक व्यय करना पड़ रहा है। यह भी देखा गया है कि एक ही परिवार के 100 से ज्यादा आयुष्मान भारत कार्ड जारी किए गए हैं। यह एक धोखा-धड़ी तो है ही, जिसका लाभ सिर्फ और सिर्फ प्राइवेट अस्पतालों और बीमा अनुदान देने वाली कंपनियां को मिलेगा। आंकड़े बताते हैं कि लगभग दो लाख से अधिक फर्जी कार्ड अब तक देश में जनरेट किए जा चुके हैं और न जाने कितने अस्पतालों द्वारा फर्जी बिल जनरेट करके सरकार को चूना लगाया जा चुका है।

मेरा मानना है कि अगर सरकार की ओर से इस योजना पर माँ निटरिंग सही तरीके से किया जाए तो कोई संदेह नहीं कि हमारा देश आने वाले समय में गरीबों को बीमारियों से मुक्त कराने में सक्षम होगा। इसके लिए संबंधित अधिकारियों-कर्मचारियों को युद्ध स्तर पर तैयारी करनी होगी। जरूरतमंद लोगों तक इसकी जानकारी पहुँचानी होगी। अतः इसके लिए केवल सरकार ही जिम्मेदार नहीं है कुछ हद तक देश के लोग भी हैं। प्रशासन इस योजना से ढांचागत सुविधा तो प्रदान कर सकता है पर इसकी सफलता देश के लोगों की ईमानदारी और जिम्मेदारी पर ही निर्भर है। अगर हम ईमानदारी से अपनी जिम्मेदारियों को समझने लगेंगे तो किसी भी योजना को उसके चरम तक पहुँचने में कोई भी रोक नहीं पाएगा।



बेरोजगारी

रजत प्रियदर्शी,
वरिष्ठ लिपिक, कार्मिक विभाग, मुख्यालय

यू तो बेरोजगारी की जटिल समस्या कई वर्षों से सभी देशों के समक्ष चुनौती पेश करती रही है, किंतु पिछले कुछ वर्षों में यह एक ज्वलंत मुद्दा बन गई है। देश का युवा वर्ग इस चुनौती के दंश को झेल रहा है। दुनिया के सभी देशों में बढ़ती जनसंख्या ने बेरोजगारी को और भी भड़क दिया है। बेरोजगारी किसी भी देश के विकास की प्रमुख बाधाओं में से एक है जो प्रगति के रास्ते को अवरुद्ध करती है।

बेरोजगारी का अर्थ

एक कुशल और प्रतिभाशाली व्यक्ति को किन्हीं कारणों से उचित नौकरी न मिलना ही बेरोजगारी है। अर्थात् जब किसी व्यक्ति को अपनी जीविका के लिए कोई काम नहीं मिलता है, तो उसे बेरोजगार कहते हैं और उसकी यह समस्या बेरोजगारी कहलाती है।

बेरोजगारी के प्रकार

बेरोजगारी कई प्रकार की होती है जैसे छिपी बेरोजगारी, अल्प बेरोजगारी, खुली बेरोजगारी / अनैच्छिक बेरोजगारी, ऐच्छिक बेरोजगारी, मौसमी बेरोजगारी, शिक्षित बेरोजगारी, चक्रीय बेरोजगारी आदि।

छिपी बेरोजगारी

यह बेरोजगारी प्रत्यक्ष रूप से नहीं दिखाई देती है। इसीलिए इसे छिपी बेरोजगारी कहते हैं। यह बेरोजगारी कृषि क्षेत्र में दिखाई देती है। यहां आवश्यकता से अधिक लोग काम में लगे होते हैं।

अल्प बेरोजगारी

जब किसी व्यक्ति को उसकी योग्यता से कम का कार्य मिलता है अथवा जब कुछ ही समय के लिए काम मिलता है, तो उस स्थिति को अल्प बेरोजगारी कहा जाता है। यदि किसी इंजीनियर को लिपिक का काम दिया जाएगा, तो उसकी योग्यता का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।

खुली बेरोजगारी / अनैच्छिक बेरोजगारी

जब कोई व्यक्ति काम करने को तैयार हो, लेकिन उसे काम न मिले, तो उस स्थिति को पूर्ण या खुली बेरोजगारी कहते हैं। भारत में पूर्ण बेरोजगारी बहुत अधिक है। यहां करोड़ों की संख्या में बेरोजगार लोग हैं और इनकी संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है।

ऐच्छिक बेरोजगारी

ऐसा व्यक्ति जो बाजार में प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने को तैयार नहीं अर्थात् वह ज्यादा मजदूरी की मांग कर रहा है और ज्यादा मजदूरी मिल नहीं रही है तो वह इस वजह से बेरोजगार है।

मौसमी बेरोजगारी

जैसे फसल काटते समय मजदूरों को रख लिया जाता है, ऐसे ही भवन निर्माण के समय मजदूर रख लिए जाते हैं। अर्थात् जब किसी व्यक्ति को वर्ष के कुछ ही महीनों के लिए काम मिलता है और शेष समय में वह बेकार रहता है, तो उस स्थिति को मौसमी बेरोजगारी कहा जाता है।

शिक्षित बेरोजगारी

शिक्षित बेरोजगारी शिक्षित या पढ़े-लिखे लोगों में होती है क्योंकि ये लोग शिक्षा के अनुसार ही नौकरी चाहते हैं जो उन्हें नहीं मिलती। इस कारण भारी संख्या में शिक्षित लोग बेरोजगार हैं।

चक्रीय बेरोजगारी

इस प्रकार की बेरोजगारी अर्थव्यवस्था में चक्रीय उतार-चढ़ाव के कारण पैदा होती है। जब अर्थव्यवस्था में समृद्धि का दौर होता है तो उत्पादन बढ़ता है और रोजगार के नए द्वार खुलते हैं और जब मंदी का दौर आता है तो उत्पादन कम होने से कम लोगों की जरूरत होती है। इसके कारण बेरोजगारी बढ़ती है।

बेरोजगारी के कई कारण होते हैं जैसे जनसंख्या वृद्धि, दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली, नए रोजगारों की कमी, निर्धनता, कृषि क्षेत्र का पिछड़ापन, मशीनीकरण, कुटीर उद्योग में गिरावट, महामारी आदि।

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि आज एक भीषण समस्या बन गई है। तेजी से बढ़ती जनसंख्या किसी भी देश की कमजोर अर्थव्यवस्था का प्रमुख द्योतक होता है। देश की जनसंख्या जिस गति से बढ़ रही है उस गति से उद्योग, नौकरियां और राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं हो रही है जिसके चलते बेरोजगारी अपनी चरम सीमा पर है। भारत में भी आजादी के 75 वर्षों के उपरांत वर्तमान जनसंख्या 138 करोड़ को पार कर गयी है। इस मामले में चीन के बाद भारत का नंबर दूसरा है, वहीं क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से भारत का स्थान 12वां है। यह भारत के पिछड़ेपन का एक महत्वपूर्ण कारण है।

दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली

किसी भी देश की शिक्षा प्रणाली उस देश के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर अपना प्रभाव डालती है। बेरोजगारी की समस्या का एक प्रमुख कारण दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली है। दोषपूर्ण शिक्षा प्रणाली का मतलब देश में समान शिक्षा का अभाव और शिक्षा के निजीकरण से है। आज देश में शिक्षा के बढ़ते निजीकरण ने शिक्षा को बाजार में खरीदी जाने वाली वस्तु बना दिया है। जिसके पास जितना अधिक पैसा है वह उतनी अच्छी शिक्षा खरीद रहा है। आज निजी स्कूलों और कॉलेजों की मंहगी फीस चुकाना एक मामूली व्यक्ति के बूते की बात नहीं है। आजकल शिक्षा, एक बहुत लाभदायक पेशा बन गया है। इस दीमक लग चुके तंत्र और प्रणाली के खिलाफ आवाज बुलंद करने की जरूरत है।

नए रोजगारों की कमी

कई तकनीकी समस्याओं और बढ़ती जनसंख्या के कारण रोजगार के अवसर नहीं बढ़ पा रहे हैं। कई संस्थानों में अनावश्यक पदों को भी समाप्त किया गया है जिससे बेरोजगारी को और बल मिला है। संस्थान की बहुत सारी शाखाओं का एक में ही विलय किया गया और बहुत सारे पदों का आपस में विलय किया गया है। उदाहरण के लिए मंत्रालयों के लिपिक और टंकक पद को ही लेते हैं। पहले लिपिक और टंकक पद के कार्य हेतु अलग-अलग व्यक्ति का चयन होता था। अब दोनों पद एक दूसरे में विलय होकर लिपिक सह टंकक हो गया है।

निर्धनता

निर्धनता किसी भी व्यक्ति के बेरोजगार होने का एक प्रमुख कारण है। भारत में निर्धनता के कारण लोगों को उचित संसाधन उपलब्ध नहीं हो पाते हैं। निर्धन व्यक्ति एक अच्छी शिक्षा से भी वंचित रह जाता है जिससे वह एक अच्छा रोजगार प्राप्त नहीं कर पाता है और बेरोजगार रह जाता है।

कृषि क्षेत्र का पिछड़ापन

भारत एक कृषि प्रधान देश है और इसमें जनसंख्या विस्फोट के कारण कृषि क्षेत्र काफी पिछड़ गया है। खेतों की हाशियाएं बहुत छोटी हो गई हैं। एक समय था जब गांव के कृषि भू-भागों की माप का पैमाना हेक्टेयर और एकड़ हुआ करता था। लेकिन आज तो बीघा और कटटे में सिमट गया है। साथ ही सु दूर किसानों में कृषि शिक्षा और इसके प्रति जागरूकता का अभाव एक प्रमुख कारण बन गया है जिसके कारण या तो फसल विनष्ट हो जाती है या बहुत कम पैदावार देती है।

मशीनीकरण

आजकल कार्यों को पूरा करने के लिए मशीनों का उपयोग किया जाने लगा है। पहले कामगार ज्यादा थे और मशीनें कम थीं और बेरोजगारी की समस्या भी कम थी। परन्तु वर्तमान में लगभग सभी कार्य मशीनों द्वारा किए जाते हैं जिससे देश में बेरोजगारी की समस्यामें वृद्धि होने लगी है। हमें ज्ञात है कि पहले सड़क, पुल-पुलिये, भवन-इमारत आदि के निर्माण में न जाने कितने लोगों को रोजगार मिलते थे। किंतु आज के इस औद्योगिक दौड़ में अधिकांश कार्य, कम समय और कम खर्च में मशीनों से करवाए जाते हैं। कंप्यूटर के आविष्कार के कारण औद्योगिक विकास में क्रांति आयी है और साथ में बेरोजगारी को भी इसने बढ़ावा दिया है।

महामारी

पिछले कुछ वर्षों में कोविड 19 महामारी, बेरोजगारी के तत्कालीन कारणों में से प्रमुख है। यहां बताने की आवश्यकता नहीं है कि इस विपदा भरे दौर में न जाने कितने घर उजड़ गए, कितनों ने अपनी जानें गंवा दीं और कितनों ने अपनों को खो दिया। इस समय में लागू हुए लॉकडाउन के कारण सारे कल-कारखाने व कार्यालय आदि पर लटके ताले ने देश की अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ दी थी। कोविड 19 की समस्या अभी तक समाप्त नहीं हुई है और देश अभी भी इसकी चुनौतियों से जूझ रहा है।

बेरोजगारी के विध्वंसक परिणाम

बेरोजगारी किसी भी विकासशील देश के लिए एक अभिशाप है। वह देश के युवाओं की मानसिक शांति छीन लेती है और युवाओं को तनावग्रस्त जीवन जीने पर मजबूर कर देती है चूंकि यह उनके आत्मसम्मान व समाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ा प्रश्न है और रोजगार के अवसर के अभाव में वह अंदर से टूट सा जाता है और आत्मग्लानि से भर जाता है। युवाओं में बढ़ता आक्रोश, चोरी, डकैती, हिंसा, अपराध और आत्महत्या जैसे अपराध करने की ओर उन्हें प्रवृत्त करता है। बात यह नहीं है कि बेरोजगारी की समस्या एकदम से आज खड़ी हो गयी है, बल्कि बेरोजगारी का दर और आँकड़े बीते कुछ वर्षों में इतने भयावह हो गए हैं कि देश का हर पांचवां युवा बेरोजगार है। आज की तारीख में किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से अगर रिक्तियों को भरने हेतु आवेदन मांगे जाते हैं तो सौ रिक्तियों के लिए लाखों में आवेदन प्राप्त होते हैं जो देश में व्याप्त बेरोजगारी को समझने के लिए काफी है।

बेरोजगारी दूर करने के उपाय

बेरोजगारी को संपूर्ण रूप से दूर नहीं किया जा सकता है पर सही दिशा में कुछ प्रयास करने पर इसे नियंत्रित तो किया जा सकता है। सबसे पहले हमें जनसंख्या वृद्धि को काबू में लाना होगा जो प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है।

सरकार को छोटे-छोटे लघु उद्योग व व्यापार को बढ़ावा देना होगा जिससे युवाओं को रोजगार के ज्यादा अवसर मिलेंगे। इसके लिए नए नीति नियम बनाने होंगे। स्व-रोजगार को सरकारी सहायता के साथ

अधिक प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। भारत एक कृषि प्रधान देश है। सरकार को कृषि सुधार पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए। बेहतर सिंचाई सुविधाएं, बेहतर कृषि उपकरण, बहु-फसल चक्रण और फसल प्रबंधन के बारे में जानकारी फैलानी होगी।

समान शिक्षा प्रणाली लागू करने की भी आवश्यकता है। ऐसी व्यवस्था हो जहां देश के एक गरीब मजदूर और किसान का बेटा भी वही पढ़े जो एक डाक्टर और वकील का बेटा। पुराने पाठ्यक्रम को नवीनतम बनाने की आवश्यकता है क्योंकि अभी भी हम इतिहास में बाबर और औरंगजेब की गाथाओं के बारे में पढ़ रहे हैं जबकि महाराणा प्रताप और झांसी की रानी लक्ष्मीबाई व अन्य महापुरुषों की वीर गाथाओं को विस्तृत रूप से पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना है ताकि हमें अपने देश के गौरवशाली इतिहास की अधिक जानकारी मिल सके। हमें अपनी पुरानी शिक्षा नीति को बदलना पड़ेगा। व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा पर अधिक जोर देना होगा।

हालांकि भारत सरकार ने बेरोजगारी दर कम करने के लिए कई कदम उठाए हैं जैसे महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना- मनरेगा और राजीव गांधी स्वावलंबन रोजगार योजना आदि भारत में बेरोजगारी की समस्याओं के समाधान के लिए सरकार की पहल हैं। फिर भी नये द्रुतगामी योजनाओं और रोजगार विश्लेषण तथ्यों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है ताकि देश के औद्योगिक, भौतिक और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े क्षेत्रों का विकास हो क्योंकि इस क्षेत्र से संबंधित एक बड़ा समुदाय अपनी तंगहाली को दूर करने हेतु विकसित क्षेत्रों की ओर निकल पड़ता है जिससे उस विकसित क्षेत्र की स्थिति पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है और असंतुलन की स्थिति पैदा हो जाती है।

भारत सरकार बेरोजगारी को दूर करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भी उठा रही है और इस समस्याओं के समाधान हेतु पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। भारत सरकार रोजगार सृजित करने हेतु देश के हर हिस्से में बड़ी-बड़ी योजनाओं पर कार्य कर रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए विश्वविद्यालय निर्मित करवा रही है। अब समय आ गया है कि भारत के लोग सरकार के साथ कंधे से कंधे मिलाकर एकता के साथ इस समस्या का सामना करें। भारत के लोग आत्मविश्वास और संवेदनशीलता के साथ इस बेरोजगारी के समाधान और निराकरण के उपायों पर विचार करेंगे क्योंकि भारत आदिकाल से प्रतिभावान, विलक्षण बुद्धिजीवियों व ज्ञानियों की भूमि रहा है जिन्होंने बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करते हुए उनका समाधान किया है। देश की युवा शक्ति देश की वह ताकत होती है जिसके सामने कोई भी बाधा ध्वस्त हो जाती है। अतः हम सहिष्णुता के साथ इस गंभीर चुनौती का सामना करेंगे, स्थिति पर जल्द ही काबू पा लेंगे और अपने देश भारत को विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा कर एक मजबूत भारत का निर्माण करेंगे।

श्रीमुष्णम

एम.गीता

मुख्य वाणिज्य लिपिक, वाणिज्य विभाग

तमिलनाडु मंदिरों की भूमि है और यहां पर कई विख्यात आध्यात्मिक स्थल हैं जिनका दौरा करना मेरा लक्ष्य है। जब कभी समय मिले, मैं तीर्थाटन पर निकल जाती हूँ। आइए, मैं तमिलनाडु राज्य के श्रीमुष्णम स्थित भू-वराह स्वामी मंदिर की सैर कराती हूँ। यह मंदिर वैष्णव संप्रदाय के 108 दिव्य देशम में से एक है।

भूवराह स्वामी

इस मंदिर में भगवान विष्णु के वराह- अवतार (भू-वराह स्वामी) और उनकी अर्धांगिनी लक्ष्मी जी अंबुजवल्ली तायार का दर्शन कर सकते हैं। मंदिर के चारों ओर ग्रेनाइट की दीवार है और इस सीमा के अंदर सभी मंदिर और मंदिर के तालाब हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक सात- स्तर वाला राजगोपुरम है।



स्वयंभू मंदिर क्षेत्र

ऐतिहासिक श्रीमुष्णम श्री भूवराह स्वामी मंदिर को देश में भगवान विष्णु के आठ स्वयंभू क्षेत्रों में से एक माना जाता है। अन्य क्षेत्रों में वानमलै पेरुमाल मंदिर , नैमिषारण्यम का देवराज स्वामी मंदिर , तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर, शालीग्राम का मंदिर , श्रीरंगम श्री रंगनाथस्वामी मंदिर , पुष्करम श्री वराह स्वामी मंदिर और बद्दीनाथ श्री बद्दी नारायण मंदिर विख्यात हैं।

उत्सव

मंदिर में प्रतिदिन छः बार दैनिक अनुष्ठान कर्म किया जाता है और तीन वार्षिक उत्सव आयोजित किए जाते हैं जिनमें से तमिल माह वैकासी (अप्रैल-मई) के दौरान मनाया जाने वाला रथ उत्सव सबसे प्रमुख है। यह त्योहार इस क्षेत्र में हिंदु- मुस्लिम एकता का भी प्रतीक है क्योंकि इस अवसर पर रथ का झंडा मुसलमानों द्वारा प्रदान किया जाता है। वे मंदिर से प्रसाद लेते हैं और मस्जिदों में अल्लाह को भेंट करते हैं। इस मंदिर का रख- रखाव और प्रशासन तमिलनाडु सरकार द्वारा किया जाता है।

प्रार्थना स्थल

श्रीमुष्णम श्री भूवराह स्वामी मंदिर संतान रहित दंपतियों और अविवाहित लोगों के लिए एक प्रसिद्ध प्रार्थना स्थल है। निःसंतान महिलाएं नित्य पुष्करणी (मंदिर का तीर्थ) में स्नान करती हैं, लगभग 12 बार पीपल के वृक्ष की परिक्रमा करती हैं, बच्चों को खिलाती हैं और वराह कवचम का पाठ करती हैं।

मंदिर की विशेषता:-

इस मंदिर की एक और अनूठी विशेषता यह है कि इसमें तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर के साथ एक असामान्य समानता है। भक्त श्री वेंकटेश्वर भगवान के दर्शन करने से पहले तिरुपति में श्री वराह पेरुमाल की पूजा करते हैं और श्रीमुष्णम में भी ऐसा ही होता है कि भक्त पीठासीन देवता श्री भूवराहस्वामी के दर्शन करने से पहले श्री श्रीनिवास पेरुमाल की पूजा करते हैं।

विशेष प्रसाद:-

इस मंदिर की विशेषताओं में से एक है भगवान को कोरै किळंगू (एक जड़वाली सब्जी) से तैयार लड्डू जिसे यहाँ प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है।

मंदिर का समय:

सुबह 6.00 बजे से दोपहर 12.00 बजे तक और शाम को 4.00 बजे से रात्रि 08.30 बजे तक आप यहां भगवान का दर्शन कर सकते हैं। सप्ताहांतों में और छुट्टियों के दिन यहां भक्तों की भीड़ होती है।

कैसे पहुंचें :-

यह प्रसिद्ध स्थली सड़क , वायु और रेल नेटवर्क के माध्यम से तमिलनाडु और भारत के सभी प्रमुख शहरों के साथ बहुत अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। श्रीमुष्णम का निकटतम रेलवे स्टेशन वृद्धाचलम जंक्शन है जो केवल 20 कि.मी. की दूरी पर है। श्रीमुष्णम से निकटतम हवाई अड्डा चेन्नै और पांडिचेरी हैं। श्रीमुष्णम चिदम्बरम से 35 कि.मी., कडलूर से 65 कि.मी., पांडिचेरी से 90 कि.मी. तंजावूर से 95 कि.मी., तथा कुंभकोणम से 54 कि.मी.की दूरी पर स्थित है।

मुझे विश्वास है कि इस लेख को पढ़ने के बाद आप यहां जाने की योजना बना रहे होंगे और य ह जगह आपके बँकेट लिस्ट में शामिल हुई होगी। आप सभी सुधी पाठकों से निवेदन है कि समय मिलने पर आप भी इस मंदिर का दर्शन करें और भूवराह स्वामी का आशीर्वाद प्राप्त करें।

इन्सान खुद से भी प्यार करना सीखें

धर्मराज मीना,
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर डीएंड डी,
इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

वैसे समाज में दिल, विल, प्यार, वार की बात होती है। अमर प्रेम की गाथाएं हैं और थोड़ा लाइट सेन्स की भी प्रेम कहानि यां हैं। लेकिन यहां एक पुरुष और महिला के बीच के प्रेम के बारे में लिखना मेरा उद्देश्य नहीं है। सोचिए यदि आप खुद से भी प्यार करने लगे तो जीवन कितना सुख से भर जाएगा । इसके लिए स्वयं के प्रति अपना व्यवहार बदलकर ज्यादा दोस्ती और सहानुभूति उत्पन्न करनी होगी।

इसके लिए नीचे दिए गए तीन बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

प्रेम में आलोचना नहीं होती:

खुद से प्यार करने के लिए आपको सबसे पहले स्वयं की आलोचना बंद करनी होगी। यदि हम समझते हैं कि हम किसी भी स्थिति में अच्छे हैं तो हम सरल जीवन बिता सकते हैं। जब हम स्वयं को बुरा महसूस करने लगते हैं तो कठिनाई प्रारंभ होती है। हर दिन एक नया दिन होता है और अगर हम प्रत्येक दिन हर काम को पहले दिन की अपेक्षा कुछ अलग ढंग से करना सीखते हैं तो नए अनुभव मिलेंगे। जीवन की धारा के साथ-साथ चलना सीखने में ही हमारी क्षमता है। हमें अपनी कमियों को जानना होगा और साथ-साथ उनसे निबटने के तरीके अपनाने होंगे। जो भी मेरे साथ हुआ हो , मैं ठीक ही हूँ, ऐसे विचार होने चाहिए। स्वमूल्यांकन की पहली आवश्यकता होती है , क्योंकि जब हम अच्छा महसूस नहीं करते तो हम स्वयं को ही कष्ट देने का तरीका ढूँढ लेते हैं। हम उन चीजों के विपरीत हो जाते हैं जो हमारे लिए लाभकारी होती हैं और जो हमारे लिए नए द्वार खोल सकती हैं। इसलिए कभी भी अपने को नीचा न समझें , हाँ, अपनी कमियों के बारे में ठीक से जानें।

जहाँ प्रेम है वहाँ डर नहीं होता-

हमें अपने आप को डराना भी बंद करना होगा। हम में से बहुत सारे लोग हैं जो स्वयं को भयावह विचारों से आतंकित करते रहते हैं और हाला त को बद से बदतर बनाते रहते हैं। एक छोटी समस्या को लेकर तिल का ताड़ बना लेते हैं। जीवन हमेशा बरबादी की आशंका से भरा रहता है तो उन्नति कैसे होगी। क्या आप रात को बिस्तर पर लेटते ही सो पाते हैं, तो आप धन्य हैं, क्योंकि आपको अपने पर भरोसा है और आप अपने आप को नहीं सताते हैं। समस्याओं की गठरी को सर पर नहीं ढोते हैं लेकिन उसे तकिया बना लेते हैं। यही सही रवैया है।

संबंधों के मामले में भी यही बात कही जा सकती है। यदि आपको कोई व्यक्ति आमंत्रित नहीं करता तो आप तुरंत स्वयं के प्रति गलत धारणा बना बैठते हैं कि मुझे पूछनेवाला कोई नहीं है, मैं अकेला हूँ। आप स्वयं को परित्यक्त और ठुकराया सा महसूस करते हैं । यही रवैया अपने काम- धन्धे के प्रति भी कुछ लोग रखते हैं। किसी ने काम को लेकर कोई टिप्पणी कर दी तो आप सोचने लग जाते हैं कि आप एकदम बेकार हैं। याद रखें ऐसे विचार नकारात्मक हैं। अगर आप आदतन विचार या स्थिति का मनन करते रहते हैं तो

उनके स्थान पर एक किसी ऐसी बात पर अपना ध्यान केंद्रित करने की कोशिश करें जो आपको पसंद है। इसके लिए भी अभ्यास जरूरी है।

प्रेम में धैर्य की जरूरत

एक दूसरा तरीका है- स्वयं के प्रति विनम्र और धैर्यवान होना। ओरेन अर्नोल्ड ने बड़े मजे की बात लिखी है - हे ईश्वर, मैं धैर्य के लिए प्रार्थना करता हूँ, और इसकी जरूरत मुझे बिल्कुल अभी है। धैर्य काफी शक्तिशाली औजार है। हममें से कई फटाफट संतुष्टि प्राप्त करने की भावना से पीड़ित होते हैं। हमें अमुक चीज चाहिए और अभी, इंतजार के लिए मुझमें सब्र नहीं है। जब हमें कतार में इंतजार करना पड़ता है या हम ट्रैफिक में फंस जाते हैं तो खीझ उठते हैं। सारे जवाब व सारी अच्छी बातें हमें बिल्कुल अभी के अभी ही चाहिए। लेकिन हम अपनी बेसब्री के चलते दूसरे लोगों के जीवन को दुःखदायी बना देते हैं। बेसब्री, ज्ञान या सीखने की राह का रोड़ा है। बिना कोई सीख हासिल किए ही हमें उत्तरों या समाधानों की आवश्यकता होती है।

अपने मन की कल्पना एक बाग के रूप में कीजिए। शुरु-शुरु में बाग, जमीन का एक टुकड़ा होता है, जहाँ कुड़ा-करकट पड़ा होता है। आपका मन भी ऐसा है जहाँ स्वयं पर घृणा के कूड़े, निराशा, क्रोध और चिंता की चट्टानें हो सकती हैं और डर रूपी पुराना वृक्ष हो सकता है। इन सबको साफ करना जरूरी है। जिस प्रकार आप बाग की सफाई करते हैं उसी तरह अपने मन रूपी बाग से भी इन नकारात्मक गुणों को मिटाएं। खुशी व समृद्धि के बीज या छोटे-छोटे पौधे रोपें। बाग में सूर्य का प्रकाश चमकता है जब आप इसमें जल सींचते हैं और प्रेमपूर्वक देखरेख करते हैं। शुरु में ज्यादा कुछ होता नज़र नहीं आता। लेकिन आप रुकते नहीं, अपने बाग की देखरेख करते रहते हैं। यदि आप में मनोबल है, धैर्य है तो निश्चित रूप से बाग फुलेगा-फलेगा। यही बात आपके मन के साथ भी होता है। आप उन विचारों का चयन कर लें जिन्हें पोषित किया जाना है। धैर्य के साथ पोषित वर्धित होते हुए वे आपके मनचाहे अनुभवों के बाग के निर्माण में योगदान देते हैं।

आपको हमेशा सकारात्मक विचारों को ही अपने जीवन में स्थान देना चाहिए और नकारात्मक विचारों को अपने आस-पास भटकने नहीं देना चाहिए। इसके परिणामस्वरूप आप खुशहाल जीवन का सपना साकार कर पाएंगे और अपनी लक्ष्य प्राप्ति के पथ पर अग्रसर होते रहेंगे।

अम्मा, मैं और हिन्दी

वी.जयश्री

कार्यालय अधीक्षक/इंजीनियरी विभाग, मुख्यालय

अम्मा, माँ, माताजी के बारे में लिखना या बात करना है तो एक घंटा काफी नहीं होगा, एक पन्ना बस नहीं होगा और एक लेख तक सीमित नहीं रहेगा। लेकिन मैं यहाँ बात करना चाहती हूँ अपनी माँ और हिन्दी भाषा के साथ मेरे अटूट संबंध के बारे में।

इसके बारे में वर्णन करना जरूरी है क्योंकि मेरी माँ के विचार ऐसे थे। उनका मानना था कि लड़कियों को जीवन में उन्नति करने के लिए अंग्रेजी पढ़ना जरूरी है और उसके अतिरिक्त शास्त्रीय संगीत और हिन्दी पढ़ना जरूरी है।

उन दिनों मेरे शहर में सी .बी.एस.ई स्कूल ज्यादा प्रचलित नहीं थे। इसलिए दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा ही एक मात्र संस्थान था जहाँ हम हिन्दी सीख सकते थे। मेरी अम्मा ने भी मुझे एक हिन्दी अध्यापिका के घर हिन्दी पढ़ने भिजवाया।

मैं स्कूल में छठी कक्षा में थी और उसी समय मुझे हिन्दी में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के पहले पाठ्यक्रम प्राथमिक में बिठाया गया। स्कूल की पढ़ाई के साथ-साथ हिन्दी पढ़ना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल लग रहा था क्योंकि उस समय तो छठी कक्षा में ही पहली बार हम लोग अंग्रेजी भी सीखना शुरू करते थे। तो इस प्रकार मेरा अध्ययन प्रारंभ हुआ था। सुबह स्कूल जाती थी और शाम को छह बजे से सात बजे तक पूरे हफ्ते में हिन्दी प्राथमिक कक्षा में जाती थी, अम्मा की जबरदस्ती के कारण।

प्राथमिक क्लास के सहपाठी मुझसे उम्र में बड़े थे। इसलिए उनके विचार और मेरे विचार अलग थे। मैंने नई स्कूल अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई शुरू की थी तथा साथ में शाम को छह बजे हिन्दी क्लास जिसके कारण मुझ पर बहुत दबाव होता था, खासकर इसलिए कि प्राथमिक क्लास में मेरे दो सहपाठी मुझसे ज्यादा हिन्दी जानते थे। मैं ही एकमात्र विद्यार्थी थी जिसको हिन्दी बहुत कठिन लगता था। मेरा पहला क्लास बृहस्पतिवार से शुरू हुआ था और तीसरे दिन शनिवार के क्लास से मुझे तकलीफ महसूस होने लगी। कारण था कि उन दिनों स्कूल की छुट्टी होने के नाते मेरा सारा समय दादाजी के घर और फिर दोस्तों के साथ खेलने में बीतता था। इस कारण छह बजे हिन्दी क्लास जाने का मेरा मन नहीं किया। दोस्त के घर मौज-मस्ती करती हुई खेल रही थी, वहाँ बगल में दीवार पर लगी घड़ी पर नजर लगी तो मेरी हालत खराब हो गई। देखते ही देखते सात बज चुका था और मैं तो यहीं थी। तो उस दिन मैं क्लास नहीं गई और जब माँ ने पुछा तो कह दिया कि उधर से ही क्लास करके आई हूँ। माँ कुछ नहीं बोली। फिर अगला दिन भी इसी प्रकार गुजरा। मन में एक बार आया कि माँ को सच बात बता दूँ, पर हिम्मत नहीं जुटा पाई। मुझे यह भी डर था कि अध्यापिका का सामना कैसे कर पाऊँगी। ऐसे ही दिन बीते। एक दिन अचानक माँ बोली कि चलो मैं भी आज तुम्हारे साथ हिन्दी क्लास चलती हूँ। मैं एक पल सोची कि वहाँ पहुँचकर अध्यापिका से नजरें कैसे मिला पाऊँगी। मैं डरी सहमी गई और फिर से एक बार कक्षा में जबरदस्ती बिठाई गई। फिर उसके बाद कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और आखिरी परीक्षा तक पढ़ी। आज इतने सालों के बाद भी मुझे हिन्दी का थोड़ा बहुत ज्ञान है तो मैं इसका क्रेडिट माँ को ही देना चाहती हूँ। आज भी मुझे इस बात का ज्ञान नहीं है कि अम्मा ने मेरी मजबूरी को कैसे महसूस किया और एक छोटी सी लड़की के नरम हृदय को समझा और कुछ नहीं कहा।

प्रसाद

एस.बालसुब्रमणियन
वरिष्ठ अनुवादक, मुख्यालय

प्रसाद, एक भक्त और भगवान के बीच की देने और प्राप्त करने की प्रक्रिया है। प्रसाद देवता को अर्पित करने वाला एक तरह का भोजन है जिसे बाद में भक्तों और अन्य लोगों के बीच बाँटा जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि कोई भी चीज जिसे भगवान की प्रार्थना के साथ चढ़ाया जाता है उसे प्रसाद माना जाता है। देवी-देवताओं को चढ़ाने के बाद उपस्थित लोगों द्वारा उसे पवित्र भेंट के रूप में सेवन किया जाना है।

सामान्य तौर पर प्रसाद शाकाहारी या मांसाहारी होता है, जैसे कुछ देवताओं के लिए प्रसाद में पका हुआ भोजन, फल और मिठाई शामिल किए जाते हैं और इस शाकाहारी प्रसाद में लहसुन, प्याज, कुरकुरमुत्ता जैसी प्रतिबंधित वस्तुओं का उपयोग नहीं किया जाता। मांसाहारी प्रसाद के मामले में चंडी,

काली, भैरव, महाकाल जैसे देवी-देवताओं को मुर्गी, बकरी, मछली, भैंसे जैसे जानवरों का मांस प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है, जिनका वध मंदिर परिसर में किया जाता है। आइए इस लेख में हम ऐसे ही मंदिरों में भक्तों को दिए जाने वाले प्रसाद के बारे में जानेंगे, विशेष रूप से, देश के कुछ प्रमुख मंदिर अपने अनूठे प्रसाद के कारण विख्यात हैं और इन प्रसादों से जुड़ी ऐतिहासिक कहानियां भी रोचक हैं।

वृंदावन

यहां पर भगवान कृष्ण के दो सबसे पसंदीदा पकवानों को प्रसाद के रूप में अर्पित किया जाता है। उनमें से एक माखन मिश्री है और दूसरा पेड़ा है।



श्री माता वैष्णो देवी कटड़ा

इस मंदिर में दो तरह के प्रसाद चढ़ाए जाते हैं। एक है मिश्री जिसे छोटी पोटली में पैक किया जाता है जिसके साथ में देवताओं का एक छोटा चांदी का सिक्का भी होता है। दूसरा प्रसाद है मुरमुरे, सूखा सेब, सूखा नारियल और इलायची के बीज का मिश्रण।



तिरुपति श्री वेंकटेश्वर मंदिर

श्रीवारी लड्डू जिसे तिरुपति लड्डू भी कहा जाता है, भगवान वेंकटेश्वर को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। 300 वर्षों से यही प्रसाद देवता को दिया जाता रहा है जो भक्तों और दर्शनार्थियों में काफी प्रिय है। इस लड्डू का छोटा अंश भी मिल जाने पर भक्त धन्य हो जाता है।



पुरी जगन्नाथ मंदिर

मंदिर में भगवान जगन्नाथ को 56 वस्तुओं का भोजन, जिसे महाप्रसाद के रूप में जाना जाता है, चढ़ाया जाता है। महाप्रसाद या महाभोग को दो प्रकारों में बांटा गया है। संकुड़ी महाप्रसाद में स्वादिष्ट व्यंजन होते हैं जबकि सुखिला महाप्रसाद में केवल मीठे व्यंजन होते हैं।

अमृतसर - स्वर्ण मंदिर स्वर्ण मंदिर में चढ़ाया जाने वाला सबसे प्रिय प्रसाद कड़ा है।



राजस्थान का श्रीनाथजी मंदिर

भगवान श्रीनाथ को 'माथाड़ी' के नाम से जाना जाने वाला एक अनूठा प्रसाद परोसा जाता है।



महादेव मंदिर, तृशूर, केरल

प्रसाद बांटने हेतु इस मंदिर में एक अनोखा तरीका अपनाया जा रहा है। जरूरतमंदों को शिक्षा प्रदान करने के लिए डीवीडी, सीडी और पाठ्य पुस्तकें दी जाती हैं।



दण्डायुदपाणी मंदिर, पळनी



लोकप्रिय रूप से 'पळनी पंचामृदम' के रूप में जाना जाता है यहां का प्रसाद। केला, गुड़, घी, शहद और इलायची आदि पांच वस्तुओं का मिश्रण है यह प्रसाद। इन वस्तुओं के साथ खजूर और शंकर मिश्री मिलाई जाती है। 2019 में तमिलनाडु में जीआई टैग पाने वाला यह पहला प्रसाद है।

करनी माता मंदिर, बीकानेर

यह मंदिर चूहों के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर में लगभग 25,000 से अधिक चूहे रहते हैं। भक्तों द्वारा चढ़ाया जाने वाला प्रसाद पहले चूहों को और फिर देवता को दिया जाता है। यहां तक कि मंदिर में भक्तों को जो प्रसाद मिलता है, वह भी चूहों द्वारा दूषित होता है। ऐसा कहा जाता है कि जिस प्रसाद में चूहे की लार होती है वह सौभाग्य लाता है।



गोगामेड़ी मंदिर, राजस्थान

यह मंदिर एक महान योद्धा गोगाजी को समर्पित है और यहां प्रसाद के रूप में प्याज और दाल दिया जाता है तथा यहां आने वाला प्रत्येक भक्त देवता को कम से कम 250 ग्राम प्याज और दाल चढ़ाता है।



गणपतिपुले मंदिर, महाराष्ट्र

यहां का प्रसाद अन्य मंदिरों से अलग है। दोपहर के समय देवता को खिचड़ी, अचार, पापड़ और बूंदी से भरपूर भोजन दिया जाता है। शाम के प्रसाद में मसाला चावल भी शामिल है।



हम भगवान से कुछ मांगते हैं और कामना पूर्ति के लिए प्रसाद चढ़ाते हैं। जो भी हम चढ़ाते हैं उसमें श्रद्धा और विश्वास भरपूर रहे, वही प्रमुख बात है। प्रसाद के रूप में हम पानी या दो पत्ते भी अर्पित कर सकते हैं लेकिन उसमें समर्पण की भावना हो वही मायने रखता है। सत्यभामा और भगवान श्रीकृष्ण की कहानी का उल्लेख करना यहां समीचीन रहेगा। सत्यभामा धनी थी और उसे अपनी समृद्धि पर गर्व था। इसे ठीक करने के लिए श्रीकृष्ण ने महर्षि नारद के साथ मिलकर एक नाटक रचा था जिसके अनुसार सत्यभामा को एक विशेष पूजा में भगवान श्रीकृष्ण को महर्षि नारद को भेंट के रूप में देना था और यह तय किया गया था कि सत्यभामा अपना धन-दौलत चढ़ाकर श्रीकृष्ण को वापस लेगी। लेकिन हुआ यह कि सत्यभामा की समृद्धि भगवान श्रीकृष्ण के सम्मुख फीकी पड़ गई। बेचैन सत्यभामा की सहायता में आई थी रुक्मणि देवी जो अपने साथ पवित्र तुलसी के दो पत्ते लाई थी जिसे तराजू में चढ़ाने पर वह भगवान श्रीकृष्ण से भी भारी निकला। इससे हम समर्पण भावना की महत्ता समझ सकते हैं। इसीलिए तो भगवद् गीता में कहा गया है-

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति - तदहं भक्त्युपहृतमश्रामि प्रयतात्मनः

अर्थात्, जो कोई भी भक्त मेरे लिए पत्र, पुष्प, फल, जल आदि भक्ति से अर्पण करता है, उस शुद्ध मन के भक्त का वह भक्तिपूर्वक अर्पण किया हुआ (पत्र पुष्पादि) मैं भोगता हूँ अर्थात् स्वीकार करता हूँ।



मैरे तरफ से हिन्दी विभाग दक्षिण रेलवे तथा पेरंबूर
अस्पताल को सुभद्रा कुमारी चौहान पुस्तकालय के
उद्घाटन के अवसर पर बहुत-बहुत बधाई ।

महाप्रबंधक की अभ्युक्ति

बी०जी०मान्या

13/8/2022

13.08.2022 रेलवे अस्पताल, पेरंबूर
सुभद्रा कुमारी चौहान पुस्तकालय का उद्घाटन

मुख्यालय के अधिकारियों के लिए चित्र आधारित प्रतियोगिता

Picture -1



Picture-2



Picture-3



Picture -4

